आज़ादी का अमृत महोत्सव

प्रवेशांक

जनवरी 2022

पारिजात

केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान

नई दिल्ली

देश

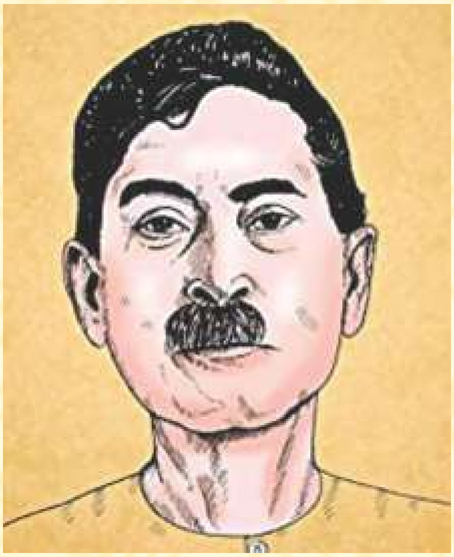

मुंशी प्रेमचंद

कला दिखती तो यथार्थ है, पर यथार्थ होती नहीं। उसकी खूबी यही है कि वह यथार्थ न होते हुए भी यथार्थ मालूम हो। उसका मापदंड भी जीवन के मापदंड से अलग है। जीवन में बहुधा हमारा अन्त उस समय हो जाता है, जब वह वांछनीय नहीं होता। जीवन किसी का दायी नहीं है; उसके सुख-दुख हानि-लाभ, जीवन-मरण में कोई क्रम, कोई सम्बन्ध नहीं ज्ञात होता, कम से कम मनुष्य के लिए वह अज्ञेय है। लेकिन कथा-साहित्य मनुष्य का रचा हुआ जगत है और परिमित होने के कारण संपूर्णतः हमारे सामने आ जाता है और जहाँ वह हमारी मानवी न्याय-बुद्धि या अनुभूति का अतिक्रमण करता हुआ पाया जाता है, हम उसे दंड देने के लिए तैयार हो जाते हैं। कथा से किसी को सुख प्राप्त होता है तो इसका कारण बताना होगा, दुःख भी मिलता है तो उसका कारण बताना होगा। वहां कोई व्यक्ति मर नहीं सकता, जब तक कि मानव-न्याय-बुद्धि उसकी मौत न माँगे। सृष्टा को जनता की अदालत में अपनी हर एक कृति के लिए जवाब देना पड़ेगा। कला का रहस्य भ्रांति है पर वह भ्रांति जिस पर यथार्थ का आवरण पड़ा हो।

–प्रेमचंद

पारिजात
ई-पत्रिका

जब तारों की रोशनी का स्रोत सूख जाएगा
हम देंगे रोशनी रातों को
जब हवा पत्थर में बदल जाएगी
हम हवा को चलाएँगे

-ज़्वीग्न्येव हर्बत

केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान

नई दिल्ली

पारिजात

ई-पत्रिका

प्रवेशांक-जनवरी 2022

केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान

मार्गदर्शक

अंशुली आर्या

सचिव, राजभाषा विभाग

संरक्षक

डॉ॰ मीनाक्षी जौली

संयुक्त सचिव, राजभाषा विभाग

प्रधान संपादक

सुमन लाल

प्रभारी निदेशक

संपादक मंडल

करन सिंह, उपनिदेशक

बंकट लाल शर्मा, उपनिदेशक

संतोष कुमार, सहायक निदेशक

डॉ॰ प्रदीप श्रीवास्तव, हिंदी प्राध्यापक

संपर्क

केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान

सातवां तल, अंत्योदय भवन

सी.जी.ओ. कॉम्प्लेक्स

लोधी रोड, नई दिल्ली-110003

फोन : 011-24364120

इसमें प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखक/रचनाकारों के अपने हैं। संपादक मंडल इसके लिए जिम्मेवार नहीं है।

अनुक्रम

1.	माननीय गृहमंत्री का संदेश	–अमित शाह जी	3
2.	माननीय गृह राज्य मंत्री का संदेश	–अजय कुमार मिश्रा जी	4
4.	माननीया सचिव महोदया का संदेश	–अंशुली आर्या	5
5.	माननीया संयुक्त सचिव महोदया की कलम से	–डॉ. मीनाक्षी जौली	6
6.	संपादक की कलम से	–सुमन लाल	7
7.	शून्य : सम या विषम?	–डॉ॰ बरुण कुमार	8
8.	आचार्य रामचंद्र शुक्ल के काव्य में सौंदर्य बोध	–डॉ॰ राकेश कुमार	10
12	बेबसी – कविता	–श्याम सुंदर	12
9.	मिसिंग जनजाति के लोक गीत	–डॉ॰ शर्मिला ताये	13
10.	मेघालय : प्रकृति की अनुपम धरोहर	–विनोद कुमार	15
11.	विचार – कविता	–विनीता तिवारी,	16
14.	महानगर का सूरज	–डॉ॰ रीता त्रिवेदी	17
15.	एक अनकही स्टोरी	–पूनम दीक्षित	18
13.	स्वीकार करो गौतम	–कमला कान्त पाठक	20
16.	अविस्मरणीय सिक्किम	–डॉ॰ महेंद्र जैन मुकुर	21
17.	ल्हारदे – लोक-कथा	–डॉ॰ उर्मिला सैनी	26
18.	पूर्वोत्तर में हिंदी के पुरोधा	–विश्वजीत मजूमदार	27
18.	हिंदी की बिंदी – लघु नाटक	–विक्रम सिंह	33

अमित शाह

गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

सत्यमेव जयते

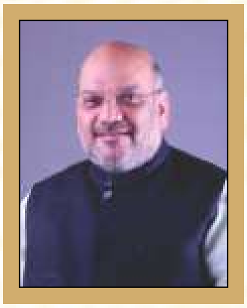

संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि राजभाषा विभाग के अंतर्गत केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान अपनी ई-पत्रिका 'पारिजात' का प्रकाशन कर रहा है। प्रत्येक मनुष्य के हृदय में एक रचनाकार छुपा होता है उस प्रतिभा को रचना के रूप में सामने लाने की आवश्यकता होती है। 'पारिजात' जैसी पत्रिका इस शून्य की भरपाई करने की दृष्टि से एक रचनात्मक पहल है। ऐसे प्रयास अभिव्यक्ति के लिए एक अवसर प्रदान करते हैं।

भारतीय संविधान द्वारा हिंदी को राजभाषा के रूप में 14 सितम्बर, 1949 को ही स्वीकार कर लिया गया था तब से अब तक हिंदी ने भाषा और राजभाषा के रूप में एक लंबी यात्रा तय कर ली है। बावजूद इसके, हिंदी को भाषा और राजभाषा के रूप में अपनी मंजिल को प्राप्त करना अभी बाकी है और केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान राजभाषा संवर्धन संबंधी कार्यों को सफलतापूर्वक करता आ रहा है।

मैं, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान के सभी सदस्यों को अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित करते हुए 'पारिजात' ई-पत्रिका के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ।

(अमित शाह)

कार्यालय : गृह मंत्रालय, नॉर्थ ब्लॉक, नई दिल्ली-110001
दूरभाषा : 23092462, 23094686, फैक्स : 23094221
ई-मेल : hm@nic.in

अजय कुमार मिश्रा
AJAY KUMAR MISHRA

गृह राज्य मंत्री
भारत सरकार
MINISTER OF STATE FOR
HOME AFFAIRS
GOVERNMENT OF INDIA

सत्यमेव जयते

संदेश

कोरोना महामारी की इस विषम परिस्थिति में केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान द्वारा ई-पत्रिका 'पारिजात' का प्रकाशन एक स्वागत योग्य कदम है।

आज पूरा विश्व एक गंभीर खतरे से गुजर रहा है। मनुष्य-जीवन खतरे में है। मृत्यु और नैराश्य के इस अंधकारमय परिवेश में रचनात्मकता की जोत जलाकर ही हम उम्मीद का उजाला फैला सकते हैं। 'पारिजात' का प्रवेशांक हमारी इसी उम्मीद के उजाले को सर्वत्र फैलाने का एक रचनात्मक और विनम्र प्रयास है।

किसी भी देश की संस्कृति अपनी भाषा और साहित्य के बिना अपूर्ण है। हिंदी ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। तब से अब तक अपनी प्रदीर्घ विकास यात्रा में हिंदी ने बहुत कुछ पाया है। यही कारण रहा है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में अंगीकार किया गया। हमारा संवैधानिक दयित्व है कि हम अधिक से अधिक कार्य मूल रूप से हिंदी में कर राजभाषा के प्रचार-प्रसार में अपना योगदान दें।

'पारिजात' जैसी भाषा और साहित्य की पत्रिका का प्रकाशन हर्ष का विषय है। मेरी ओर से सभी लेखकों एवं संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएँ।

(अजय कुमार मिश्रा)

Office : Room No. 127, North Block, New Delhi-110001 Tel. : 23094054 Fax : 23093549
E-mail : ajay.kumar19@sansad.nic.in

अंशुली आर्या, आई.ए.एस.
सचिव
ANSHULI ARYA, I.A.S
Secretary

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
राजभाषा विभाग
गृह मंत्रालय
GOVERNMENT OF INDIA
DEPARTMENT OF OFFICIAL LANGUAGE
MINISTRY OF HOME AFFAIRS

संदेश

प्रेमचंद ने लिखा है कि हमारी कसौटी पर वही साहित्य खरा उतरेगा जिसमें कुछ चिंतन हो, स्वाधीनता का भाव हो, सौंदर्य का सार हो, सृजन की आत्मा हो, जीवन की सच्चाई का प्रकाश हो, जो हम में गति, संघर्ष और बेचैनी पैदा करे। आज प्रेमचंद के इस कथन को समझने की आवश्यकता है और जब हमें अपने पूर्वजों से एक विकसित, सुगठित और सुसंगत भाषा विरासत में मिली है तो हमारा कर्तव्य है कि हम उसका उपयोग प्रचार–प्रसार में करें।

हिन्दी न केवल भारत की राजभाषा है बल्कि आम जन में अग्रणी स्थान पर है। केंद्रीय कार्यालयों में हिंदी के अधिकाधिक उपयोग को सुनिश्चित करने के लिए भारत सरकार द्वारा अनेक प्रयास किए जा रहे हैं। राजभाषा विभाग की ओर से केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग–प्रसार को प्रोत्साहित करने के लिए अनेक कार्यक्रम चलाए जाते रहे हैं। 'पारिजात' ई–पत्रिका का प्रकाशन इसी कड़ी का एक हिस्सा है।

हमारे देश में विविध समुदायों, संस्कृतियों को हिंदी ने परस्पर जोड़ा है और उनकी कला, इतिहास और साहित्य को प्रभावित किया है। हिंदी अगर भारत की सामासिक संस्कृति की अभिव्यक्ति का माध्यम है तो पत्रिका 'पारिजात' इस संस्कृति को परिवर्धित और परिपुष्ट करने का माध्यम बनेगी ऐसा मेरा विश्वास है।

मैं 'पारिजात' के प्रवेशांक के प्रकाशन के अवसर पर सभी रचनाकारों, पाठकों एवं संपादक मंडल को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएँ देती हूँ।

(अंशुली आर्या)
सचिव, भारत सरकार
राजभाषा विभाग
गृह मंत्रालय

तृतीय तल, एन.डी.सी.सी.–II भवन, जय सिंह रोड, नई दिल्ली–110 001
फोन : (91) (11) 23438266, फैक्स : (91)(11)23438267, ई–मेल : secy-ol@nic.in

डॉ॰ मीनाक्षी जौली
संयुक्त सचिव

DR. MEENAKSHI JOLLY
JOINT SECRETARY
Telefax : 23438130
E-mail : jsol@nic.in

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
GOVERNMENT OF INDIA
गृह मंत्रालय
MINISTRY OF HOME AFFAIRS
राजभाषा विभाग
DEPARTMENT OF OFFICIAL LANGUAGE
चतुर्थ तल, एन.डी.सी.सी.-II भवन
4th FLOOR N.D.C.C.-II BHAWAN,
जय सिंह रोड, नई दिल्ली-110001
JAI SINGH ROAD, NEW DELHI-110001

संदेश

केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान की ई-पत्रिका 'पारिजात' का प्रथम अंक हिंदी प्रेमियों को सौंपते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। इस पत्रिका का प्रकाशन न केवल राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार को बढ़ावा देने के लिए बल्कि देशभर में संस्थान के कार्मिकों में साहित्यिक अभिरुचि को बढ़ावा देने के लिए भी है। साहित्य ही किसी भाषा को पूर्णता प्रदान करता है और उसके भाषिक स्वरूप को निर्धारित करता है।

मैं आशा करती हूँ कि भविष्य में अधिक से अधिक कार्मिक इस पत्रिका से जुड़ेंगे और अपनी रचनाओं द्वारा इसे समृद्ध करेंगे और पत्रिका को एक नया आयाम प्रदान करेंगे। किसी भी यात्रा का आरंभ एक छोटे से कदम से होता है। 'पारिजात' का यह प्रथम अंक हमारा एक छोटा-सा कदम और छोटा-सा प्रयास है, लेकिन इसका उद्देश्य बड़ा है। वह उद्देश्य है हिंदी की रचनाओं के माध्यम से भारतीय संस्कृति के वैविध्य को अभिव्यक्त करना और उस गंगा-जमुना संस्कृति को वाणी देना जो हमारे देश की पहचान रही है।

मैं पत्रिका के प्रकाशन से अवसर पर सभी लेखकों के प्रति आभार प्रकट करती हूँ और उन्हें बधाई देती हूँ। मैं आशा करती हूँ कि हिंदी प्रेमी और पाठक इस पत्रिका को अपना स्नेह जरूर देंगे।

मीनाक्षी जौली

(डॉ॰ मीनाक्षी जौली)
संयुक्त सचिव, राजभाषा
भारत सरकार

संपादक की कलम से

केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान की ई-पत्रिका 'पारिजात' का प्रकाशन ऐसे समय में किया जा रहा है, जब हम आज़ादी का अमृत महोत्सव मना रहे हैं। तिरंगे में तीन रंग हैं और 'पारिजात' के फूल में भी यही तीन रंग हैं- 'वृंत्त हरा, डंठल केसरिया और फूल सफ़ेद'। पारिजात का यह फूल भी जाने-अनजाने आज़ादी के अमृत महोत्सव में अपनी नैसर्गिक भूमिका निभा रहा है।

पत्रिका आरंभ करने के पीछे हमारी मूल मंशा न केवल संस्थान के कार्मिकों की रचनात्मक प्रतिभा को सामने लाना है बल्कि संस्थान की गतिविधियों को भी पाठकों, हिंदी प्रेमियों और केंद्र सरकार के विभिन्न कार्यालयों के सामने रखना है ताकि एक मंच के माध्यम से हम प्रशिक्षण कार्यक्रम को एक विस्तार दे सकें।

हमें प्रसन्नता है कि केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान द्वारा विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर इस पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है हमें संतोष भी है कि देश भर से हमें पर्याप्त रचनाएँ प्राप्त हुई हैं। आशा करती हूँ कि भविष्य में भी इसी प्रकार हमें सहयोग मिलता रहेगा।

संपादक मंडल ने 'पारिजात' के इस प्रवेशांक को तैयार करने हेतु जो परिश्रम किया है, निस्संदेह यह समय और श्रमसाध्य है। मैं संपादक मंडल के सभी सदस्यों को साधुवाद देती हूँ और हिंदी प्रेमियों और पाठकों के हाथों 'पारिजात' का यह अंक इस उम्मीद के साथ सौंपती हूँ कि वे हमें अपने बहुमूल्य विचारों से अवश्य अवगत कराएँगे।

(सुमन लाल)
प्रभारी निदेशक
केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान

शून्य : सम या विषम?

-डॉ॰ बरुण कुमार

जाड़े का मौसम आ पहुँचा है। दिल्ली में यह मौसम भयावह प्रदूषण लेकर आता है। प्रदूषण से निपटने के कई उपाय किये जा रहे हैं- स्मॉग टॉवर लगाना, पड़ोसी राज्यों में धान की कटाई के बाद खेतों में बची खूँटियों (पराली) को जलाने पर प्रतिबंध लगाना आदि। प्रदूषण का एक बड़ा स्रोत वाहनों से निकलने वाला धुआँ है। इस पर नियंत्रण करने के लिए एक बार दिल्ली में ऑड-ईवन यानी सम-विषम फॉर्मूला लागू करने का उपाय किया गया। यानी जिस दिन की तिथि सम संख्या की थी उस दिन सम संख्या वाले वाहनों को सड़कों पर चलने की अनुमति थी और अगले दिन यानी विषम संख्या की तिथि को विषम संख्या वाले वाहन सड़कों पर चलने की। लोगों को हिसाब लगाना पड़ा कि उनकी गाड़ी की संख्या सम है या विषम। सम संख्या उन संख्याओं को कहते हैं जो 2 से विभाजित हो जाती हैं और विषम संख्या वे हैं जो 2 से विभाजित नहीं होतीं। उदाहरण के लिए 10 सम संख्या है जबकि 11 विषम। जिन संख्याओं के अंत में 0, 2, 4, 6 और 8 होता है वे सभी सम होती हैं। 2, 4, 6 और 8 स्वयं भी सम संख्याएँ हैं क्योंकि ये 2 से विभाजित हो जाती हैं।

लेकिन फर्ज कीजिए किसी गाड़ी का नंबर सिर्फ '0' है, तो वह गाड़ी सम तिथि वाले दिन को चलेगी या विषम तिथि वाले दिन को? यानी शून्य '0' क्या है? सम या विषम? ज्यादातर लोग तुरंत कह बैठते हैं 'सम'। लेकिन शून्य में तो तीन से भी भाग लग जाता है। तो क्या यह विषम नहीं है? इस प्रश्न का समाधान सत्रहवीं सदी में ही किया जा चुका है लेकिन लोग आज भी भ्रम में पड़ जाते हैं। इससे पहले कि सीधे-सीधे उत्तर पर चले जाएँ, इस प्रश्न से संबंधित अन्य बातों की चर्चा कर लेना उचित होगा।

दशमिक पद्धति दस अंकों पर आधारित प्रणाली है - 0, 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8 और 9। इनमें एक से लेकर नौ तक वास्तविक संख्याएँ हैं। यानि जब हम कहते हैं एक किताब, दो किताब तो हम वास्तव में उस वस्तु को उतनी संख्या में देखते हैं। लेकिन शून्य के बारे में ऐसा नहीं है। शून्य किताब, शून्य कलम कहने से कोई मानसिक छवि नहीं उभरती। कोई शून्य वस्तु नहीं होती। शून्य एक कल्पना, एक अवधारणा है। इस कारण गणित के इतिहास के आरंभिक दिनों में शून्य को अंक मानने के बजाय चिह्न माना गया था। बेबीलोन और ग्रीक सभ्यताओं में शून्य का इस्तेमाल छोटी-बड़ी संख्याओं का फर्क पता करने के लिए किया जाता था। तेरहवीं सदी में भी भारतीय-अरबी अंकों (इंडो-अरेबिक, जिन्हें हम भारतीय अंकों का अंतरराष्ट्रीय रूप कहते हैं, जिनका प्रयोग अंग्रेजी के साथ करते हैं) को लोकप्रिय बनाने वाले इटेलियन गणितज्ञ फिबोनॉकी ने भी शून्य को चिह्न ही माना था। लेकिन अब इसे एक अंक माना जाता है।

अब इस बात की पड़ताल करते हैं कि शून्य सम संख्या है या विषम। शुरुआत गिनती के क्रम से करते

हैं। गिनती में हर सम संख्या के बाद विषम संख्या आती है और हर विषम के बाद एक सम। 0 के बाद 1 आता है। 1 विषम संख्या है। इस हिसाब से उससे पूर्व आने वाला 0 सम संख्या हुई।

एक से अधिक अंकों वाली किसी संख्या की समता-विषमता उसके आखिरी अंक से जानी जाती है। आखिरी अंक यदि 2 से विभाज्य है तो वह संख्या सम होगी। यानी 2, 4, 6, 8 से भी समाप्त होने वाली संख्याएं सम होती हैं। इसके विपरीत 3, 5, 7, 9 से समाप्त होनेवाली संख्याएँ विषम होती हैं। यदि संख्या के अंत में शून्य आए तो वह भी 2 से विभाज्य होती है। अब, शून्य यदि संख्याओं के अंत में आकर उनको सम बनाता है तो उसे स्वयं भी सम होना चाहिए।

अंक गणित का एक मूल सिद्धांत है कि दो सम संख्याओं को जोड़ने, घटाने या गुणा करने पर हमेशा एक सम संख्या मिलती है। 2+0=2 और 2-0=2 होता है। इनमें 2 सम है। 2 से गुणा करने पर गुणनफल हमेशा सम मिलेगा। इस तर्क से 2 में 0 को गुणा करने पर प्राप्त होने वाला गुणनफल शून्य (2x0 =0) को सम संख्या ही होना चाहिए।

शून्य केवल सम ही नहीं, अनंत बार सम है। जो संख्या 2 से एक ही बार विभाजित होती है (जैसे : 14/2=7) तो वह एकल सम (सिंगल इवन), दो ही बार विभाजित हो तो दुहरा सम (डबल ईवन), जैसे : 12/2=6/2=3, तीन ही बार विभाजित हो तो तिहरा सम (ट्रिपल इवन), जैसे : 24/2=12/2=6/2=3 कहलाती है। शून्य में 2 से अनंत बार भाग दिया जा सकता है (0/2=0/2=0/2=0/2=0........)। इसलिए शून्य अनंत बार सम है।

इसलिए शून्य को कम न समझें। यह खाली नहीं है, इसके अंदर बहुत कुछ है। यह दशमिक प्रणाली के सभी अंकों में अवधारणा की दृष्टि से जटिलतम है। दार्शनिक संदर्भों में भी शून्य बहुत गहरे अर्थ रखता है।

■■■

≈≈

सर्वप्रथम और महान सामाजिक सेवा जो हम अर्पित कर सकते हैं-
अपनी देशी भाषाओं पर लौटना है,
हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में उसका प्राकृत स्थान दिलाना है।

-महात्मा गांधी

≈≈

आचार्य रामचंद्र शुक्ल के काव्य में सौंदर्य बोध

-डॉ. राकेश कुमार

आचार्य शुक्ल हिंदी साहित्य के उन विरले मनीषियों में से हैं, जिन पर किसी भी भाषा के साहित्य और देश को गौरव हो सकता है। आचार्य शुक्ल का सुभग व्यक्तित्व, चिंतनशील मेधा और भावोच्छल सरस हृदय के संतुलित संनियोजन से निर्मित विशिष्ट तत्वों का दुर्लभ सपुंज था। किसी भी कवि या लेखक का सौंदर्य बोध जानने के लिए हमें उस व्यक्ति द्वारा विवेचित सौंदर्य के पीछे कार्यरत उसकी मानसिक स्थिति एवं जीवन को आधार बनाना पड़ता है। अत: पहले सौंदर्य पर विचार करते हैं।

सौंदर्य पर आदिकाल से लेकर आज तक विचार होता आ रहा है। यह विवाद का विषय रहा है कि सौंदर्य वस्तुपरक होता है या व्यक्तिपरक। इस प्रश्न का सर्वमान्य, तर्क संगत समाधान सम्भव नहीं है। सौंदर्य वस्तु के रूप में निहित रहता है। इसे भी नकारा नहीं जा सकता कि सौंदर्य ब्रह्म शक्ति का भी गुण विशेष है, जो सर्वमान्य है किन्तु सौंदर्य का बोध कराने वाली व्यक्ति की सत्ता का महत्व ज्यों-ज्यों बढ़ता गया त्यों-त्यों सौंदर्य के व्यक्तिपरक होने की मान्यता बलवती होती गई। पश्चिमी विचारक सौंदर्य को व्यक्तिपरक ही मानते हैं। प्लेटो के अनुसार "वस्तुत: सौंदर्य व्यक्ति चरित्र पर ही निर्भर करता है।" सी. क्लाइव वेल लिखते हैं कि "विशिष्ट रूपाकार' (सिग्निफिकेंट) की एक मात्रा गुण है, जो सभी दृश्य कलाओं में निहित रहता है।'' एल.ए.रीड ने कहा है कि "सौंदर्य सिर्फ अभिव्यक्ति का भाव है जो सच्ची सुंदरता से पूर्ण रूपाकार वह है जो अपने को विशिष्ट ढंग से अभिव्यक्त करता है।''

आचार्य शुक्ल का मत है कि "सौंदर्य बाहर की कोई वस्तु नहीं है, मन के भीतर की वस्तु है। वीर कर्म से पृथक् वीरत्व कोई पदार्थ नहीं है। कुछ रूप रंग की वस्तुएं ऐसी होती हैं जो हमारे मन में आते ही थोड़ी देर के लिए ऐसा अधिकार जमा लेती हैं कि उसका ज्ञान ही हवा हो जाता है और हम उन वस्तुओं के भावना रूप में ही परिणत हो जाते हैं। हमारी अंतस्सत्ता की यही तदाकार परिणति सौंदर्य की अनुभूति है। इसके विपरीत कुछ रूप रंग की वस्तुएं ऐसी होती हैं जिनकी प्रतीति या भावना हमारे मन में कुछ देर टिकने ही नहीं पाती और एक मानसिक आपत्ति-सी प्रतीत होती है। जिस वस्तु के प्रत्यक्ष ज्ञान या भावना से तदाकार परिणति जितनी अधिक होगी उतनी ही वह वस्तु हमारे लिए सुंदर कही जाएगी। इससे यह स्पष्ट है कि भीतर और बाहर का भेद व्यर्थ है। जो भीतर है वही बाहर है। यही बाहर हँसता खेलता, रोता, गाता, खिलता, मुरझाता, जगत भीतर भी है जिसे मन कहते हैं। जिस प्रकार जगह रूपमय है, गतिमय है उसी प्रकार मन भी रूपगति का संघात ही है। रूप मन और इन्द्रियों द्वारा संघटित है या मन इन्द्रिय रूपों द्वारा; इससे यहां प्रयोजन नहीं। हमें तो केवल यह समझाना है कि हमें अपने मन का और अपनी सत्ता का बोध रूपात्मक ही होता है।"

कवि की दृष्टि तो सौंदर्य की ओर स्वयं ही आकर्षित होती है, चाहे वह सुंदरता किसी वस्तु के रूप रंग में हो अथवा किसी मनुष्य के मन, कर्म और वचन में। उत्कर्ष साधनार्थ, प्रभाव की वृद्धि के लिए, कवि लोग कई प्रकार के सौंदर्यों का मेल भी किया करते हैं। राम की रूपमाधुरी और रावण की विकरालता भीतर का प्रतिबिंब सी जान पड़ती है। मनुष्य के भीतरी बाहरी सौंदर्य के साथ चारों ओर की प्रकृति के सौंदर्य को भी मिला देने से वर्णन का प्रभाव भी अत्यधिक हो जाता है।

आचार्य शुक्ल का यह सौंदर्य बोध चेतना के दिव्य स्तर से जुड़ा है। वे सौंदर्य को समस्त चराचर में व्याप्त विभु की छाया से सम्पृक्त देखते हैं। सारा विश्व उसी परम शक्ति के छाया लोक से विभासित है। यही कारण है कि आचार्य शुक्ल वनस्थली की नैसर्गिक सुषमा पर, नदियों और झरनों की कल-कल करती संगीत-माधुरी, बूँदों की

छहराती छटा पर धरती की लहलहाती हरीतिमा पर अपना हृदय लुटा देते हैं। आकाश में घुमड़ती काली-काली घटाओं को देखकर वह मयूर-नृत्य की केवल कल्पना ही नहीं करता वरन् मयूरों के साथ 'कवि का मन' भी नृत्य करने लगता है। उन्हें इस दिव्य अवसर पर अभिसारिका का संभार और उसका आकुल रोमांच आंदोलित नहीं करता। वे तो सौंदर्य की उस आभा पर अपना अहं विसर्जित कर देते हैं। सौंदर्य का यह वशीकरण निश्चित रूप से असीम व्यापकता और अतींद्रिय बोध का परिचायक है।

अब भी जब-जब जोती जाती/धरती सौंधी महक उड़ाती।/धानी लहरों पर छिटकी हैं/सूही छींटें-सी ललनाएं।/हरियाली की सीमा पर हैं/झुकी स्निग्ध साँवली घटाएँ/शीतलता नयनों में छातीं/मन बगलों के संग उड़ातीं।

शुक्ल जी प्रकृति के इस परम सौंदर्य पर सम्मोहन वृत्ति को मानवता का परम गुण मानते हैं और परम सत्ता का अनुग्रह भी। समाज का मंगल विधान ही सौंदर्य का आवश्यक गुण है और यह जगत् प्रसिद्ध है कि शुक्ल जी लोक मंगल के आदर्श के परम उपासक थे। गांवों के प्राकृतिक सौंदर्य पर मुग्ध होकर उसे धन्य मानने के पीछे शुक्ल जी का यही मनोभाव कार्यरत दिखाई पड़ता है।

इन्हीं कछारों में लहराते/गाएँ यों ही बिखरी पाते/कूँजों की किलकार गूँजती/कंकरीले टीलों पर आती/ऊँचे कटे कगार भेद कर/झाड़ी ऐंठ जहाँ दिखलाती/कोई डाल हमारे सिर पर/वहीं बैठ जाते थे थककर।

गाँव राष्ट्रीय उत्पादन की एक प्राथमिक इकाई है। जहाँ श्रम की उपासना की जाती है। ग्रामीणों का व्यवहार कृत्रिमता एवं आवरण से हीन होता है। यही सात्विक सौंदर्य शुक्ल जी को अपनी और खींच लेता है। वे उस अद्भुत सौंदर्य में डूबकर अपना सब कुछ लुटा बैठते हैं-

तुम भी ग्राम ! खुले सपने हो/रूपरंग में वही बने हो।/कटी-बँटी हरियाली में तुम/वैसे ही तो जड़े हुए हो। उठे तरल-श्यामल दल-गुंफित/अंचल में ही पड़े हुए हो/धरती माता की मटियाली/भरी गोद यह रहे निराली।

इस निरालेपन का बोध शुक्ल जी के तीव्र मनोभावों की व्याख्या है, जो लोक जीवन से उनके गहरे प्रेम को व्यंजित करती है। आचार्य शुक्ल ग्रामीण सौंदर्य पर मुग्ध होने में एक विशेषता यह है कि उनकी प्रकृति के बाह्य सौंदर्य पर रीझने में उनकी दृष्टि सतही नहीं है, उनके आकर्षण का बिंदु वहां कर्मयुक्त निश्चल जीवन है। अतः कठोर कर्म से अद्भुत स्वेद कणों से सिक्त आत्माभिमानी सौंदर्य ही शुक्ल जी की सहानुभूति का विषय है। कथा साहित्य में ग्रामीण जीवन के उद्घाटन में जिस महान कार्य को प्रेमचंद पूरा कर रहे थे, उस महत् कार्य का प्रथम चरण तो शुक्ल जी के काव्य में मिलता है। शुक्ल जी ने प्रकृति को मानव जीवन के साथ जोड़कर दोनों को एक ही तत्व मानकर सौंदर्य को व्यापक भाव-भूमि प्रदान करके कम स्तुत्य कार्य नहीं किया है। 'सौंदर्य' में 'कर्म' और 'कर्म' में 'सौंदर्य' की सन्निहिति कितनी रमणीय है:

निधि खोल किसानों के धूल-सने/श्रम का फल भूमि बिछाती जहाँ/चुन के, कुछ चोंच चला करके/चिड़िया निज भाग बँटाती जहाँ/कगरों पर काँस की फैली हुई/धवली अवली लहराती जहाँ/मिल गोपों की टोली कछार के बीच/है गाती और गाय चराती जहाँ/दल राशि उठी खरे आतप में/हिल चंचल चौंध मचाती जहाँ/उस एक हरे रंग में हलकी/गहरी लहरी पड़ जाती जहाँ/कल कर्बरता नभ की प्रतिबिंबिता/खंजन में मन भाती जहाँ/कविता, वह ! हाथ उठाए हुए/चलिए कविवृंद ! बुलाती वहाँ।

आचार्य शुक्ल के सौंदर्य बोध की दूसरी विशेषता वह है जो उसे उच्च भूमि पर ले जाकर खड़ी कर देती है। वे सौंदर्य के अन्वेषी मात्र नहीं, वे तो सौंदर्य की सरिता में गहरे बैठकर अवगाहन करने वाले हैं। शुक्ल जी आँखों से झाँक कर हृदय की निधि के दर्शन करते हैं। शुक्ल जी रूप को आत्मा की अभिव्यक्ति स्वीकार करते हैं। उनकी यह मान्यता मानव जगत तक ही सीमित नहीं बल्कि मानवेत्तर प्रकृति में भी व्याप्त है:

काया की न छाया यह केवल तुम्हारी द्रुम/अंतस के मर्म का प्रकाश यह छाया है/भरी है इसी में वह स्वर्ग-स्वप्नधारा अभी/जिसमें न पूरा-पूरा नर वह पाया है/शांतिसार शीतल प्रसार यह छाया धन्य /प्रीति-सा पसारे इसे कैसी हरी काया है/हे नर ! तू प्यारा इस तरु का स्वरूप देख/देख फिर घोर रूप तूने जो कमाया है।

वास्तव में शुक्ल जी काव्य दृष्टि नर क्षेत्र के भीतर रहने वाली न होकर समस्त चराचर व्यापिनी है, संपूर्ण जीवन क्षेत्र में समस्त चराचर क्षेत्र से मार्मिक स्थलों का चयन करके उनको काव्य में स्थान देने वाली दृष्टि वास्तव में व्यापक ही है। जब कभी हमारी भावना का प्रसार इतना विस्तीर्ण और व्यापक होता है कि हम अनंत व्यक्त सत्ता के भीतर नरसत्ता के स्थान का अनुभव करते हैं तो हमारी पार्थक्य बुद्धि का परिहार हो जाता है। उस समय हमारा हृदय ऐसी उच्च भूमि पर पहुँचा रहता है जहाँ उसकी वृत्ति प्रशांत और गम्भीर हो जाती है, उसकी अनुभूति का विषय ही कुछ बदल जाता है। यह सर्व विदित है कि लोक मंगल आचार्य शुक्ल के काव्य और जीवन का आदर्श रहा, यही आदर्श विचारधारा उन्हें लोकवादी कट्टर भूमि पर खड़ा करके सौंदर्य बोध को जीवन से जोड़ती है-

देखते हैं श्वान एक धूप में खड़ा है आगे/आश्रय के हेतु जिसे वृक्ष ने बुलाया है/साहस न होता उसे छाया में बढ़ाए पैर/जहां क्रूर आसन् मनुष्य ने जमाया है/पूंछ में विनीत विद्यमान प्रेम-व्यंजना है/लगी दीन दृष्टि, लटी लोममयी काया है/एक दुतकार को दबाती चुचकारें बढ़ीं/यहाँ जगी प्रीति, वहां भगी भीति छाया है।

शुक्ल जी गर्मी में छाया के नीचे बैठकर हाँफते हुए कुत्तों का उल्लेख तो करते हैं, परंतु उनका ध्यान कभी भी पसीने से तर रोकड़ के हिसाब को मिलाते मुनीम की तरफ नहीं गया। यह शुक्ल जी की लोकमंगलवादी दृष्टि का ही परिचायक है। आचार्य शुक्ल का सौंदर्यबोध अत्यंत उच्च, प्रदात्त और उज्जवल भूमि पर स्थित है। वह नर क्षेत्र से बाहर समस्त प्रकृति में प्रसरित है।

■■■

बेबसी

-श्याम सुंदर

सोचता हूं मैं भी इस भीड़ में
अपनी पहचान छुपाकर सबसे कहीं खो जाऊँ
जिंदा लाश में बदल जाऊँ
पर आत्मा है कि मानती ही नहीं है
सोचता हूं कुछ क्षण इक पल को
फिर से मैं नन्हा-सा बालक बन जाऊँ
पर मजबूरियां इतनी हैं जीवन की
बचपन को जैसे वो पहचानती ही नहीं
सोचता हूं जागकर बंद आंखों से
खुद के करीब आ जाऊँ इक क्षण
पर आंख है कि बंद होती ही नहीं
छोटे होने से बड़ा होने की इस जद्दोजहद में
उम्र इतनी बची है अब जो कि
काटे से अब कटती ही नहीं
सोचता हूँ फिर से कुछ पल कुछ नई सांसें
जी लूँ अपनी जिंदगी की
पर बदहवासियाँ जिम्मेदारियों की थमती ही नहीं
सोचता हूँ कल इक नया सवेरा लेकर उठूँगा
तरो-ताजा बनकर नए विश्वास से
पर यूँ लगता है दिन चढ़कर दरवाजों पर ऊँघ-सा रहा है
नए सूरज की धूप जैसे दिखती ही नहीं
भागा नहीं कभी अपने जीवन धर्म से मन मेरा
पर दुनियां को मेरी ये सच्चाई पचती ही नहीं
सोचता हूँ मैं भी इस भीड़ में
अपनी पहचान छुपाकर सबसे कहीं खो जाऊँ
जिंदा लाश में बदल जाऊँ, पर आत्मा है कि
मानती ही नहीं है।

■■■

मिसिंग जनजाति के लोकगीत – एक संक्षिप्त परिचय

–डॉ॰ शर्मिला ताये

मनुष्य की वास्तविक संस्कृति उसकी प्रथाओं, लोक नृत्यों, परम्पराओं, परंपरागत विश्वासों और लोकगीतों में अंतर्निहित होती है। भारत विशाल देश होने के कारण विभिन्न बहुमूल्य लोकगीतों से भरा पड़ा है। पूर्वोत्तर भारत में बसा राज्य 'असम' अपनी गोद में विभिन्न जनजातियों और उनकी सम्पन्न संस्कृति को धारण किए हुए है। भाषा मुख्यत: असमिया होने पर भी वहां विभिन्न बोलियों का प्रचलन है। ब्रह्मपुत्र उपत्यका तथा पहाड़ी अंचल का जन-जीवन विभिन्न सामाजिक व सांस्कृतिक परम्पराओं को अब तक संजोए हुए है। असम में बसी विभिन्न जनजातियों में 'मिसिंग जनजाति' एक प्रमुख जनजाति है; जो असम में धेमाजी, उत्तर लखिमपुर, सोनितपुर, तिनसुकिया, डिब्रूगढ़, शिवसागर, जोरहाट, गोलाघाट जिलों एवं अरुणाचल प्रदेश के कुछ अंचलों में निवास करते हैं। मिसिंग भाषा चीनी-तिब्बती परिवार की तिब्बत बर्मी शाखा से संबंधित है। जहाँ तक लोक साहित्य का प्रश्न है, उक्त जनजाति में लोक साहित्य की खान है। मिसिंग लोकसाहित्य में लोक-जीवन का वास्तविक रूप प्रकट होता है। मिसिंग लोकगीत आज भी गांवों में एक कंठ से दूसरे कंठ में मौखिक रूप से प्रवाहित होते हैं। मिसिंग भाषा में लोकगीतों को 'नि:तोम' कहा जाता है। मिसिंग 'नि:तोम' (लोकगीतों) का निर्माण अपने-आप विशाल जन समूह के द्वारा होता है, किसी व्यक्ति-विशेष के द्वारा नहीं। काव्यत्व की दृष्टि से विचार करने पर यह निश्चित धारणा बनती है कि मिसिंग 'नि:तोम' में पर्याप्त मात्रा में काव्य-तत्व उपलब्ध होता है। लय मिसिंग 'नि:तोमों' की आत्मा है। इन 'नि:तोमों' के गायन में किसी पंक्ति विशेष की पुनरावृत्ति एक महत्वपूर्ण क्रिया है। मिसिंग 'नि:तोम' (लोकगीतों) को निम्नलिखित रूप से विभाजित किया जा सकता है।

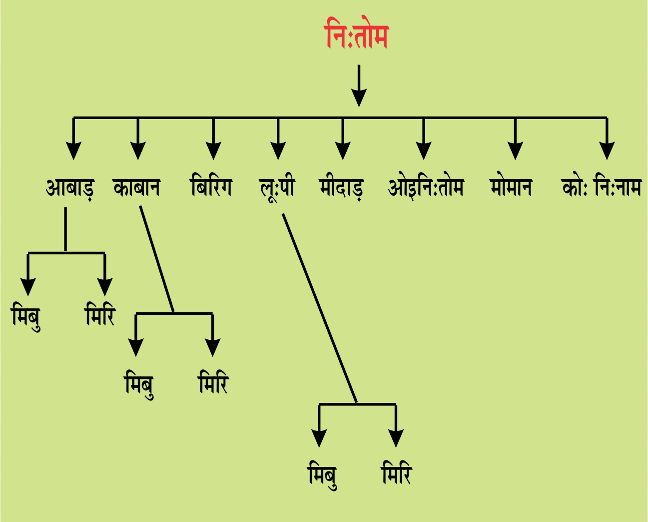

1. आबाड :- मिसिंग समाज में पूजा-पाठ, अनुष्ठान करवाने पुरोहित को मिबु और गिरि कहते हैं। देवताओं की उत्पत्ति, उनका गुणगान सृष्टि की रचना, वंश परंपरा, आदि की व्याख्या करने वाले पुरोहितों को 'मिबु' कहते हैं। जो किसी प्रकार की बिमारी या दुर्घटना आदि से रक्षा या बचाव के उपाय हेतु देवताओं और आत्माओं से संपर्क करते हैं उन्हें 'मिरि' कहते हैं। ये दोनों वर्ग के पुरोहित मिबु और मिरि अपने मांगलिक क्रिया-काण्ड में विभिन्न प्रकार के गीतों की रचना करके पारलौकिक जगत या रहस्यमय जगत का वर्णन करते हैं। इन गीतों को 'आबाड़' कहा जाता है। 'आबाड़' गीतों को मिसिंग समाज का 'गीति इतिहास' या स्मृतिशास्त्र के पवित्र श्लोक भी माना जा सकता है।

2. काबान : – 'काबान' का अर्थ है- विलाप। दु:ख-दर्द, हर्ष-विषाद आदि हृदय से प्रस्फुटित होकर 'काबान' में निकलते हैं। ये गीत व्यक्तिगत वेदना के उद्‌गार होने पर भी इसमें समाज का प्रतिबिंब झलकता है। 'काबान' गीतों की भाषा प्रांजल और सुर हृदय विदारक होता है।

3. बिरिग :- 'बिरिग' गीतों को उत्सव गीत माना जा सकता है। जो गीत किसी वार्षिक उत्सव अथवा पूजा के अवसर पर गाए जाते हैं, उन्हें 'बिरिंग' नि:तोम कहते हैं।

4. लू:पो :- 'लू-पो नि:तोम' कथोपकथन मूलक है। एक गीत को दो व्यक्ति गाते हैं, इस तरह कथा अथवा विषय वस्तु आगे बढ़ती है। 'लू:पी नि:लोम' को दो भागों में बांटा जा सकता है- युवक-युवतियों के प्रेममूलक गीत- 'मिम्बिर-यामे नि:तोम'; और अन्यान्य साधारण विषयवस्तु से संबंधित गीतों को 'दायि-दोमो' कहा जाता है। ये गीत प्रायः प्रेममूलक तथा आनंदमयी होते हैं।

5. मिदाड़ :- 'मिदाड़' का अर्थ है- विवाह। 'मिदाड़ नि:तोम' विवाह के गीत हैं जो विवाह के अवसर पर गाए जाते हैं। इन गीतों में वधू के मन की व्यथा का वर्णन होता है। इन गीतों को प्रायः क्रंदन करके गाया जाता है।

6. ओइनि:तोम :- मिसिंग लोक-साहित्य में प्राप्त विभिन्न गीति-साहित्य में 'ओइनि:तोम' (विरह/प्रेम गीत) ही प्रमुख है। 'ओइनि:तोम' प्रेम से संबंधित सभी रसों से परिपूर्ण है। आशा, निराशा, हताशा, मिलन, विच्छेद, सुख-दुख, हँसी-मज़ाक, क्रंदन, विद्रुप, निंदा, प्रशंसा आदि सभी रसों से संबंधित विषयों की 'ओइनि:तोम' में अभिव्यक्ति देखी जाती है। इतना ही नहीं, समसामयिक इतिहास, राजनीति, सामाजिक, आचार-व्यवहार, युद्ध-विग्रह आदि विषयों की भी 'ओइनि:तोम' में झलक मिलती है। 'ओइनि:तोम' में संपूर्ण मिसिंग समाज की संस्कृति छिपी हुई है।

7. मोमान :- विभिन्न उत्सवों में गाए जाने वाले गीतों को 'मोमान-नि:तोम' कहा जाता है। 'मो-मान' गीतों में मिसिंगों के पहाड़ छोड़कर ब्रह्मपुत्र उपत्यका आगमन की कहानी, जीवन-शैली आदि का वर्णन किया जाता है।

8. को: नि:नाम :- लोरियों को 'को: नि:नाम' कहा जाता है। इन्हें 'बुनि-नि:तोम' भी कहते हैं। मिसिंग स्त्रियाँ पुरुषों से भी अधिक परिश्रमी होती हैं। कर्म-व्यस्तता के कारण बच्चों की रखवाली के लिए 'नेबिड'/'दुम्देड़' रखने का नियम है। 'को: नि:नाम' गीत नेबिड, माँ, घर की बड़ी-बूढ़ी दादियाँ, नानियाँ, बहनें भी बच्चे को सुलाने और प्रसन्न रखने के लिए गाती हैं।

9. धर्म गाथा :- मिसिंग समाज के लोग केवलिया वैष्णव धर्म परंपरा को भी यदा-कदा मान लेते हैं। वैष्णव परंपरा की बहुत-सी धर्म-गाथाओं (कीर्तन गीत) की रचना मिसिंग भाषा में की गयी है। इन गाथाओं को 'गुका' (घोषा) भी कहा जाता है।

उपसंहार : मिसिंग 'नि:तोम' को जन-जीवन का दर्पण कहा जाए तो इसमें कुछ भी अत्युक्ति नहीं होगी इन 'नि:तोमों' का जीवन अमर और अनश्वर है। समय के साथ गीतों का बाह्य रूप बदलता है। लेकिन इन गीतों की परंपरा सर्वथा नष्ट नहीं होती। इन गीतों में लौकिक सभ्यता, लौकिक आचार, लौकिक व्यवहार, लौकिक रीति-रिवाज एवं परंपराओं का प्रतिबिंब झलकता है। चूंकि 'नि:तोमो' सामूहिक रूप में होते हैं, इसमें वैयक्तिक भावना का अभाव रहता है। इनके रचयिताओं में आत्म-प्रचार की प्रवृत्ति नहीं है। ये 'नि:तोम' शत-शत कंठों से विचरण करते हुए परंपरा के अमर प्रवाह को अक्षुण्ण बनाए हुए हैं।

■■■

मेघालय : प्रकृति की अनुपम धरोहर

-विनोद कुमार

मेघालय भारत के उत्तर पूर्व में स्थित सात बहनों के राज्यों में से एक प्राकृतिक रूप से सबसे सुंदर राज्य है। जैसा कि नाम से ही विदित होता है कि यह "मेघों का घर" है, अतएव यहाँ पर शीत ऋतु के दो-तीन महीने छोड़कर लगभग पूरे वर्ष खूब बारिश होती है। खासी, गारो और जयंतिया पहाड़ियों से घिरा मेघालय आपको बेदाग प्राकृतिक सुंदरता का अतुलनीय अनुभव प्रदान करता है।

मेघालय में मुख्य रूप से खासी, गारो और जयंतिया समुदाय (जनजातियों) के लोग निवास करते हैं, जो अधिकतर ईसाई धर्म को मानने वाले हैं। इन समुदायों की भाषाएँ एवं संस्कृतियाँ एक दूसरे से भिन्न हैं। मेघालय की राजधानी "शिलांग" है, जो कि ईस्ट खासी हिल्स जिले में पड़ता है। अत: यहाँ पर अधिकतर खासी समुदाय के लोग निवास करते हैं। खासी जनजाति में महिला प्रधान समाज पाया जाता है। यहाँ पर घर की सबसे छोटी बेटी के नाम पूरी संपत्ति रहती है। इस समाज की एक और अत्यंत रोचक बात यह है कि यहाँ पर शादी के बाद लड़की ससुराल में जाकर नहीं रहती है, बल्कि लड़के को ससुराल में जाकर रहना पड़ता है।

चारों तरफ फैले हरियाली भरे पहाड़ों, झरनों, जंगलों, झीलों आदि के कारण शिलांग शहर को "पूर्व का स्कॉटलैंड" कहा जाता है। अन्य हिल स्टेशनों की भांति शिलांग में भी पूरे वर्ष मौसम ठंडा रहता है। ब्रिटिश शासनकाल में शिलांग पूरे पूर्वोत्तर भारत की राजधानी रह चुका है, उस समय यह पूर्वोत्तर भारत की शिक्षा का मुख्य केंद्र भी था। शिलांग में आज भी पूर्वोत्तर के अन्य राज्यों के लोग अध्ययन करने आते हैं।

प्रकृति की गोद में बसा शिलांग एक मुख्य पर्यटन स्थल भी है, यहाँ पर पूरे वर्ष देश-विदेश से पर्यटक आते हैं। एलिफेंट फॉल्स, वार्डस् लेक, डॉन बोस्को म्यूजियम, शिलांग पीक, स्वीट फॉल्स, उमियम लेक, लाइतलुम कैनयान/घाटी आदि यहाँ के महत्वपूर्ण पर्यटन स्थल हैं।

दुनिया का सबसे अधिक वर्षा वाला स्थान मावसिनराम/चेरापूंजी शिलांग से लगभग 55 किमी दूर है, जिसके लिए शिलांग से टैक्सी लेकर जाया जा सकता है। वर्षा ऋतु में अधिकतर लोग चेरापूंजी जाते हैं। पहाड़ों के रास्ते से चेरापूंजी जाते समय बादल आपका रास्ता घेर लेते हैं और पूरी तरह भिगो देते हैं। पहाड़ों के बीच से बादलों को चीरते हुए रास्ते से गुजरने का अनुभव भी अपने आप में विशेष होता है। चेरापूंजी में सैकड़ों झरने हैं जो अपनी सुंदरता और गड़गड़ाहट से आपका मन मोह लेंगे। कई स्थानों पर आप झरनों में नहा भी सकते हैं जो आपको एक विशेष प्रकार की अनुभूति प्रदान करेगा। सेवन सिस्टर्स वाटर फॉल्स, नोखालीकाइ वाटर फॉल्स, रेनबो वाटर फॉल्स, किनरेम वाटर फॉल्स, मावसावा वाटर फॉल्स, डेंथेलिन वाटर फॉल्स आदि चेरापूंजी के मुख्य आकर्षण हैं।

शिलांग से लगभग 80 किमी दूर बांग्लादेश बार्डर पर स्थित "डावकी" नामक स्थान पर "उमंगोट" नदी है जो बांग्लादेश और भारत की सीमा को अलग

करती है। इस नदी में क्रिस्टल जैसा साफ पानी है, अर्थात जब आप नौकायन करेंगे तो ऐसा प्रतीत होगा कि नाव हवा में तैर रही है, नदी के अंदर पड़ी छोटी से छोटी चीज आपको स्पष्ट रूप से दिखेगी। इस नदी में एक द्वीप है, जहां पर नाव के माध्यम से जाकर पर्यटक खूब मौज मस्ती करते हैं। यहाँ पर बांग्लादेश सीमा मे जाकर कुछ खरीददारी भी की जा सकती है। डावकी से 15 - 20 किमी की दूरी पर ही एशिया का सबसे स्वच्छ और सुंदर गाँव मावलिननांग भी है। इस गाँव का हर व्यक्ति साफ सफाई पर बहुत जोर देता है। इस गाँव के आसपास ही पेड़ों की सजीव जड़ों से प्राकृतिक रूप से निर्मित एक रूट ब्रिज भी है।

भारत के प्रत्येक व्यक्ति को कम से कम एक बार अवश्य मेघालय घूमने आना चाहिए, जिससे कि उसे अनुभूति हो सके कि दूसरे देशों से कई लाख गुना सुंदरता हमारे देश में एकांत में छुपी हुई है, जिसे हम देख ही नहीं पाते। हमारे देश में भी प्रकृति ने एकांत में बैठकर इतनी सुंदर प्राकृतिक चीजों की रचना की है, जिसे हम जान नहीं पाते। ऐसा प्रतीत होता है कि हिंदी के कवि श्रीधर पाठक की पंक्तियाँ "प्रकृति यहाँ एकांत बैठि, निज रूप संवारति" मेघालय की सुंदरता के संबंध में ही लिखी गई हों।

■■■

विचार

-विनीता तिवारी

जिंदगी की शाम में या ठहरे हुए कोहराम में,
बजते शंख-मृदंग में या पसरे घने विश्राम में।
ढूँढ़ा तुम्हें नव रात-दिन,
खोया तुम्हें नव रात-दिन।

तुम कल्पना की छाँव में या मस्तिष्क के विराम में,
तुम श्वास के आधार में या मृत्यु के आभास में,
नित्य यूं चलते रहे, सत्य के ख्याल में

आया नजर यूं इक दिन, सहसा नया कोहराम-सा,
कोई कह रहा था 'राष्ट्रप्रेम',
कोई कहा रहा था 'राष्ट्रदोह'
कोई कह रहा था 'भूख' इसे,
कोई कह रहा था 'मृत्यु' इसे।

सब सत्य के पर्याय से वक्त से टकराये थे,
भीषण अग्नि की छाँव में कुछ कहने ही आए थे।
पर मौन के भ्रम ने या चंचलता के क्रम ने,
रौंदा तुम्हें नव रात-दिन, तोड़ा तुम्हें नव रात-दिन।

सत्य के पर्याय से ढूँढा तुम्हें नव रात-दिन,
खोया तुम्हें नव रात-दिन।

तुम कौन हो या कोई नहीं,
तुम सब कुछ या कुछ भी नहीं,
तुम स्वयं स्वरूप या आकारहीन,
तुम संस्कार या मर्यादाहीन।
सत्य के पर्याय से ढूँढा तुम्हें नव रात-दिन

हाँ तुम 'विचार' हो
तुम क्रांति के सूत्रधार हो,
तुम अग्नि का ज्वार हो।

हाँ तुम विचार हो
तुम वक्त में नहीं,
तुम वक्त की दरकार हो,
हाँ तुम विचार हा

■■■

महानगर का सूरज

-डॉ॰ रीता त्रिवेदी

निरभ्र श्यामल पटल पर
उदित महानगर का सूरज।
सुस्त अलसाया-सा फैलाए अपने कर
ऊँघता हुआ महानगर का सूरज।
बढ़ता दिन के साथ-साथ अनमना-सा
महानगर की अट्टालिकाओं से डरा-सा।
लील जाती हैं जो उसके करपुंजों को
छू नहीं पाता वह वसुधा के आंचल को।
महानगर की कितनी ही पीढ़ियों का इतिहास
है आज इस बूढ़े सूर्य के पास।
हर रोज उदय अस्त होते उसने जो देखा
पल-पल की घटनाओं का उसके पास है लेखा।
बादलों के झरोखों से झांकता कई बार
सोचता है कितना बदल गया संसार।
हरियाली अब कहीं नहीं, उजड़ा है हर चमन
लोग भी बदल गए हैं, बदला सबका मन।
नकली दुनिया रच ली है अपने चहुँओर
कुछ नहीं है उसमें केवल गर्त धुआँ और शोर।
जाने क्या पाने को लगी हुई है होड़
भूल कर अपनी संस्कृति संस्कार दिए हैं छोड़।
नकली जीवन पर अपने कितना है उसे गुमान
गिरगिटों से भी रंग ज्यादा बदल रहा इंसान।
लगाकर सैंकड़ों मुखौटे भूल गया अपनी असली पहचान
कितना नकली है नकली दुनिया का इंसान।
मानव तो है मगर मानवता सो गई है।
रिश्तों में भी आज गर्मी कहीं खो गई है।
इंसानियत तो मर गई है लाश बना इंसान
आत्मा तो नष्ट हो गई बच गया परिधान।
चिंता में डूबा सूर्य बढ़ता जाता है चुपचाप
उद्‌गार से भरकर करता हुआ प्रलाप।
शाप की काली छाया से ढका हुआ
कलियुग के राग रंग से थका हुआ।
अपनी थकी हुई पलकों को मूंदकर
सोचता हुआ सा महानगर का सूरज।
भविष्य की कल्पना के आतंक से भरकर
अपनी गति खोता हुआ सा महानगर का सूरज।

एक अनकही स्टोरी

-पूनम दीक्षित

सर्दियों की रात, कपकपाती हुई ठंड और अलाव के पास आग तापते कंबल में लिपटे बैठे थे माधव बाबू। तकरीबन 17 साल बाद गांव आए थे फुरसत से, कुछ दिनों के लिए। हैदराबाद में अच्छी सरकारी नौकरी और क्रमश: तरक्की की सीढ़ियाँ चढ़ते हुए वहीं एक सुखी गृहस्थी में स्थापित हो गए थे माधव बाबू। बढ़िया सी दुमंजिला कोठी, पत्नी, अच्छे कॉलेज में पढ़ रहे बच्चे, भला और क्या चाहिए? अपने आय व्यय की समीक्षा करते हुए उनके व्यावहारिक दृष्टिकोण ने उन्हें समझदार बना दिया था कि पुश्तैनी जमीन और जायदाद का भी संरक्षण कर लें वरना ऐसा न हो कि अपने हिस्से की जमीन से हाथ धोना पड़ जाए। इसी लिए बीच-बीच में गांव एक-एक/दो-दो दिन का चक्कर अवश्य लगाते थे, पर इस बार 10 दिन का समय लेकर आए थे, अपने हिस्से के पुश्तैनी मकान में मरम्मत करवा लेने और खेत के अपने हिस्से के कुछ अंश को बेचने का भी मकसद था। खाना खाकर अलाव के गिर्द सुखद गर्माहट में बड़ी भाभी से गांव के करीबी रिश्तेदारों की गाथाओं में मगन थे, तभी भाभी ने पूछा- ''लल्ला जी, आपको कुसमी याद है? कुसमी .... जाने क्या हुआ दिल धक से कर उठा। ''वही मँझली भाभी की छोटी बहन'' बड़ी भाभी ने हाँ में गर्दन हिलाई।

माधव बाबू यादों की पिछली कई सीढ़ियाँ मानो फिसलते जा रहे थे, धुंध के परे 21//22 वर्ष का माधव 55 वर्ष के माधव के सम्मुख आकर खड़ा हो गया था। कॉलेज के दिन, युवावस्था की सपनीली सुबहें शामें और गाँव का पहला पढ़ा-लिखा ग्रेजुएट। उन दिनों की बात ही निराली थी। अपनी शिक्षा की वजह से गाँव में बड़ी धाक थी उनकी। सीधे सादे अनपढ़ लोगों के बीच अंग्रेजी के कुछ शब्द, वाक्यांश बोलकर तो किसी अरस्तू से कम सुख्याति नहीं बटोरते थे, ऊपर से एक सनग्लास (काला चश्मा) लगाकर जब निकलते तो उन्हें खुद पर ही नाज़ होने लगता था, आइना काले चश्मे में उन्हें माधव की बजाय ऋषि कपूर की छवि दिखाता और उनकी चाल में सहज ही हीरो वाली मस्ती छलकने लगती। उन्हीं दिनों कुसमी अपनी जीजी के यहाँ प्राय: आया करती थी, उनकी मदद के लिए, मँझली भाभी पेट से थीं और उनकी तबीयत खराब रहती थी। उम्र का तकाजा, रिश्तों की चुहलबाजी में मँझली भाभी चहचहाती कि कुसमी की शादी तो लल्ला जी से ही होगी। दोनों की नजरें मिलती और एक में शोखी के बादल बरसने को तैयार तो दूसरे की नज़र मिलते ही बीरबहूटी सी लज्जा की लाली टपकने लगती। दोनों मन ही मन मान चुके थे कि उनका ब्याह तो होना ही है। माधव बाबू बहाने तलाश कर मँझली भाभी के घर के इर्द-गिर्द चक्कर काटते, उनके घर के काम में बड़ी तत्परता दिखाते पर सिर्फ तब तक, जब तक कुसमी वहाँ होती थी। दो दिलों के बीच इश्किया की हल्की-हल्की रुन-झुन किसी विंड चाइम की तरह फिज़ा में लहराती रहती। खुद को ऋषि कपूर समझने वाले माधव बाबू आँखों पर काला चश्मा लगाए एक झीनी सी प्रेम कहानी के नायक की तरह कुसमी के अंतर में उतरते चले गए।

कॉलेज की पढ़ाई समाप्त कर माधव बाबू मथुरा की गलियों से बहुत आगे दिल्ली चले गए, जहाँ उन्हें पढ़ाई के साथ-साथ कंपिटीशन की तैयारी भी करनी

थी। गांव का इकलौता पढ़ा-लिखा काले चश्मे वाला छैला बाबू दिल्ली महानगर में सपनों के बादलों से उतर कर जमीन पर खड़ा होने की जद्दोजहद में जुट गया। उफ्फ जीवन कितना कठिन है। कुछ बनने के लिए बहुत कुछ का त्याग जरूरी है। माधव बाबू पढ़ाई के साथ ही पार्ट टाइम जॉब में मसरूफ हो गए। उन्हें कुछ बनना था। तभी तो गांव से शहर आकर तंग गुफानुमा कमरे में रह कर भी भविष्य के सुख के लिए समझौता कर लिया था, उनके व्यक्तित्व का व्यावहारिक पक्ष हमेशा से सजग था। दिल्ली की आपाधापी, भागती सड़कों, ऊँची इमारतों, सजे-धजे बाजारों ने रोमांटिक ऋषि कपूर की जगह एक सुनहरे भविष्य का नया सपना थमा दिया था जिसमें कुसमी कहीं नहीं थी। अब सपने भी बड़े होने लगे थे, लालसा भी और उन्हें पूरा करने की अदम्य इच्छा भी। शहर की मार्डन लुक्स वाली हमेशा तरोताजा दिखती आधुनिक लड़कियाँ, उनके लहराते खुले बाल, स्मार्ट परिधान, लिपस्टिक, मस्कारा वाली आकर्षक सूरत के बीच मसाला पीसती, पानी भरती, चक्की में दाल दलती कुसमी धूप में ओस की बूंद की तरह उड़ चुकी थी। माधव बाबू राजपत्रित अधिकारी बनकर हैदराबाद चले गए और सुना था मँझली भाभी से कि कुसमी का ब्याह किसी सीआरपीएफ के जवान से हो गया था। माधव बाबू कुसमी को विस्मृत कर चुके थे। अपनी आलीशान जिंदगी में वे बहुत आगे बढ़ चुके थे। काले चश्मे की कहानी अब किसी को भूले से भी नहीं सुनाते। अब तो रिमलेस रे-बैन के पावर ग्लास उनके आभिजात्य की कथा सुनाते हैं। अब उनका पुश्तैनी मकान उनके सर्कल में हेरीटेज होम और खेत फार्म हाउस में यूं तब्दील हो चुके हैं कि कभी-कभी उन्हें खुद पर ही संदेह होता है कि क्या वाकई उस कस्बे में इतना अरसा बिताया है?

आज बड़ी भाभी ने पुरानी याद को कुरेद दिया था। भाभी ने बताया कि कुसमी मँझली भाभी के यहाँ आई हुई है और माधव से मिलना भी चाहती है। उसके दो बेटे हैं जो पढ़ रहे हैं। माधव बाबू सोचने लगे, कुसमी मन मसोस के रह जाती होगी जब भाभियों से उनके ऐश्वर्य, प्रभुत्व, शौकीन जिंदगी के बारे में सुनती होगी। कहाँ उसका सीआरपीएफ का फौजी पति और दूर पोस्टिंग के कारण अकेले वीरान गांव की जिंदगी, कहाँ माधव की रश्क करने लायक शहर की अभिजात्य जिंदगी। ''यक'' कितने बेवकूफाना दिन थे। फिर भी मन में छुपा तब का ऋषि कपूर उझक-उझक कर कुसमी को, आज की कुसमी को देखना चाहता था या कहें तो अपने ऐश्वर्य से परास्त करने में ज्यादा इंटरेस्टेड था। माधव ने कुसमी से मिलने का मन बना दिया। मँझली भाभी के बैठक के बाहर चारपाई पर बैठकर माधव हैदराबाद के अपने विला, परिवार, प्रभुत्व का बखान करता रहा। पूरी कोशिश कर रहा था कि वह एकदम स्थितप्रज्ञ सा सुनाई दे फिर भी अपनी शानोशौकत के डायनामाइट से सबके छक्के छुड़ा दे। उसे पक्का अन्दाजा था कि कुसमी दरवाजे की ओट से सब सुन रही है और ये खयाल उसे तसल्ली देने वाला था।

माधव ने भाभी से निहायत अनजान, भूल से गए वाकये के हठात स्मरण दिलाने वाले अंदाज में कहा- ''कुसमी अपने घर संसार में मजे में ही होगी। मैं तो उसे कब का भूल गया था, वो उन दिनों की बात है जब मैं भी एकदम भोला-भाला किशोर था और कुसमी तो मेरे लिए मेरी बहन की तरह थी। इस से ज्यादा तो कुछ नहीं था, अलबत्ता पता होता कि यहाँ है तो उसकी भाभी (माधव की पत्नी) से कहकर उसके और बच्चों के लिए कुछ उपहार ही मँगवा कर ले आता। खैर, अपने

पति के साथ, जब भी छुट्टी में वो घर आएँ तो हैदराबाद घूमने आ सकती हैं।''

एक सन्नाटा काफी देर तक पसरा रहा...............
....माधव कुसमी से आकर मिलने, उसे देखने के लिए बेताब होता रहा पर कुसमी नहीं आई। कुछ न समझ पाकर माधव झुँझलाकर चला गया। अगने दिन मँझली भाभी उसके घर आकर बोली– ''कुसमी अब तुमसे मिलना ही नहीं चाहती। कहती है जो इंसान रिश्तों की कद्र नहीं जानता और अपनी सुविधा अनुसार प्रीतिमय रिश्ते को स्वीकार न कर उसे किसी दबाव में सखी के स्थान पर बहन कहने का दुर्धर्ष भाव रखता है, ऐसे छद्म इंसान से बचा कर भगवान ने मुझे सही जीवनसाथी दिया जो मुझे संपूर्णता में स्वीकार करता है।''

डायनामाइट फटा था परंतु माधव के ऐश्वर्य का नहीं एक नारी के स्वाभिमान का, रिश्ते की स्वीकृति की खूबसूरती का, जहाँ दिखावा नहीं था, सहजता थी, बनावट नहीं। वो औरत होकर बचपने की ''एक छोटी सी लव स्टोरी'' को छुपाने की जयरत से बंधी नहीं थी जबकि आलीशान जिंदगी जीने वाला माधव सहजता से दूर बनावट की बुनावट में उलझता पूरी किताब की जगह किताब की जिल्द भर रह गया था। आज उसका दंभ से दिपदिपाता चेहरा राख–राख हो चुका था। एक छोटी सी लव स्टोरी................................ न न, लव नहीं रेत पे उकेरे एक विरल से रेखा चित्र की मानिंद एक अनकही स्टोरी लहर से धुल चुकी थी। कुसमी विजेता की तरह अस्ताचलगामी सूरज के साथ विलीन हो चुकी थी, अपनी अस्मिता के साथ।

■■■

स्वीकार करो गौतम

–कमला कान्त पाठक

मैं वही अहिल्या हूँ जिसका कर डाला तुमने तिरस्कार,
गौतम! मैं वही अहिल्या हूँ, जिसको तुमने अभिशाप दिया।

तप के आतप की यही दृष्टि, तुम तपोपूत का यह विवेक,
युग–युग से दहता आया है मुझको, मुझ–सी हर नारी को।

मैं तो प्रस्तर हो रही किन्तु तुम भी कम कातर नहीं रहे,
छल–छद्म सही, पर बोलो तो किसका कितना अपराध रहा?

नभ में अब भी है वह शशांक, सबका दिग्दर्शन करता है,
तुम तो प्रबुद्ध हो कहो आर्य, तुम भी कैसे हो गए भ्रमित?

तब तो थे उसके दो लोचन, तब थी उसकी ऐसी कुदृष्टि,
था दुस्साहस ऐसा, अब तो हो गया पुरंदर सहस्राक्ष।

किसने क्या पाया, क्या खोया, किसका कैसा प्रारब्ध रहा,
इसका करके सम्यक विचार,
तुम कहो कहाँ कब हुए विकल?

तुम तो थे किंचित सदय–प्राण, प्रायश्चित का करके विधान,
हरि–चरणों का कैसा प्रताप, कैसा उद्धार हुआ मेरा?

किससे बोलो क्या चूक हुई, किसने क्या मूल्य चुकाया है,
किसका पातक यह, आज तलक जो मुझे बेधता आया है?

इस युग में भी तुम निरख रहे घर–घर मेरा दारुण स्वरुप,
हो जाता है क्या नहीं तुम्हारा ह्रदय वेदना से विदीर्ण?

तुम नर हो, बड़े तपस्वी हो, गौतम! मत अत्याचार करो,
मुझसे अस्तित्व तुम्हारा है, स्वीकार करो, स्वीकार करो।

■■■

अविस्मरणीय सिक्किम

-डॉ॰ महेंद्र जैन मुकुर

दुनिया की सबसे ऊंची चोटी माउंट एवरेस्ट को देखने या हिमालय की पवित्रतम झील मानसरोवर में स्नान करने का मन हर एक भारतीय का करता है किंतु यह संभव न हो सके तो उसके नजदीक की पर्वतमाला सिक्किम, गंगटोक, दार्जिलिंग आदि की यात्रा कर हिमालय की पर्वत शृंखला का आनंद लिया जा सकता है।

इसी आनंद को लेने के लिए मैंने अपनी यात्रा नौ फरवरी को मुंबई से प्रारंभ की। सुबह सात बजे मुंबई से दिल्ली और दिल्ली से बागडोगरा के लिए एयर इंडिया की कनेक्टिंग फ्लाइट लेकर लगभग दो बजे बागडोगरा हवाई अड्डे पर पहुंचे। चूंकि हमने कन्डक्टेड टूर लिया था इसलिए एयरपोर्ट से बाहर निकलते ही टैक्सी मेरा इंतजार कर रही थी हम लोग टैक्सी में बैठे और गंगटोक की ओर रवाना हुए। यह हमारा किसी पर्वतीय क्षेत्र का छठवां टूर था किंतु इस टूर में जो आनंद आया वह अवर्णनीय है। रास्ते में चलते हुए घुमावदार सड़कें, घने जंगल, ऊँचे-ऊँचे वृक्ष, जगह-जगह फूटते हुए झरने और पूरे रास्ते भर किनारे चलती हुई तीस्ता नदी का आनंद उठाते हुए हम बढ़े चले जा रहे थे। रास्ते में एक रेस्टोरेंट में रुक कर के हमने गरमा-गरम चाय और हल्का-फुल्का नाश्ता किया, उस रेस्टोरेंट के पीछे की बालकनी से तिस्ता नदी का नीला-नीला पानी देख कर मन रोमांच से भर गया।

शाम होते-होते हम गंगटोक के अपने निर्धारित होटल में पहुंच गए। हमारी व्यवस्था एम॰जी॰ रोड पर स्थित डोमा रजिडेंसी में की गई थी। होटल बहुत ही साफ-सुथरा एवं मनमोहक था। रात हमने होटल में व्यतीत की हमारे पहुंचते ही एक दूसरा व्यक्ति आया और उसने मुझसे दूसरे दिन नाथूला पास घूमने जाने के लिए आवश्यक दस्तावेज लिए। अगर आप गंगटोक घूमने के लिए जा रहे हैं तो यहाँ पर एक ऐसी जगह है जिसे आप कभी मिस नहीं करना चाहेंगे। हम बात कर रहे हैं अंतर्राष्ट्रीय भारत-चीन सीमा की, जिसको देखने के लिए आपको एक परमिट की जरूरत होती है। इस परमिट को आप गंगटोक जाने के बाद आसानी से हासिल कर सकते हैं। बता दें कि नाथूला पास भारत-चीन सीमा पर सिर्फ भारतीय पर्यटकों को जाने की अनुमति होती है और विदेशियों को यहाँ जाने की अनुमति नहीं है। यह सीमा एक ऐसी जगह है जहाँ पर जाने के बाद आप भारतीय सैनिकों के साथ चीन के सैनिक और उनके गुजरने वाले ट्रकों को भी देख सकते हैं।

शाम का भोजन करके हम लोग एमजी रोड पर टहलने के लिए निकले। एमजी रोड गंगटोक का बहुत ही सुंदर एवं देखने योग्य रोड है। रोड पर चलते हुए ऐसे लग रहा था जैसे हम किसी घर के साफ-सुथरे आंगन में चल रहे हों। जगह-जगह तरह-तरह के सामानों एवं खाने पीने की दुकानें हैं, सिक्किम के परिधानों की दुकानों पर भीड़ देखते ही बनती थी। हम लोगों ने कुछ अपने लिए तथा कुछ गिफ्ट देने के हिसाब से सामान खरीदा और दूसरे दिन की यात्रा का प्रोग्राम बनाने लगे।

दूसरे दिन सुबह ही निर्धारित समय पर नाथूला पास जाने के लिए गाड़ी होटल के सामने खड़ी थी। हम लोग

गाड़ी में बैठकर नाथूला पास के लिए निकले। गंगटोक से नाथूला के लिए जाने हेतु कुछ फॉर्मेलिटी करनी होती है। जो कि मेरे टूर कंडक्टर ने पहले ही करके रखी हुई थी रास्ते में कागजी कार्रवाई करते हुए हमें एंट्री पास मिल गया और हम मिलिट्री के एरिया में प्रवेश कर गए। इस एरिया में यात्रियों को कुछ विशेष सावधानी बरतनी पड़ती है क्योंकि यह सुरक्षा और रक्षा से संबंधित इलाका है इसलिए सभी यात्री पूरा सहयोग करते हैं। मेरी गाड़ी में पीछे दो लोगों को बैठा कर हमें रवाना किया गया। हम बड़े ही आनंद पूर्वक नाथूला की ओर बढ़ रहे थे, मौसम बड़ा सुहावना था, हल्की- हल्की धूप खिली हुई थी, जगह-जगह सफेद चमकते हुए बर्फ के पहाड़ देखकर ऐसे लग रहा था कि इन पर लोट-पोट होकर दोस्ती की जाए। हम आगे बढ़े और हम से रहा नहीं गया हमने कहा कि हमें थोड़ी देर रुकना चाहिए। हमारे साथ जो हमें गाइड कर रहे थे और हमारी गाड़ी के ड्राइवर भी थे मिस्टर दावा बहुत ही योग्य और कुशल तथा हँसमुख स्वभाव के व्यक्ति थे, उन्होंने कहा कि सर, हम आगे कुछ खाने के ऑडर के लिए रुकेंगे उसके बाद हम किसी एक पहाड़ पर उसका नज़ारा देखने के लिए भी रुकेंगे, इसलिए हम आगे बढ़ते गए और हमने उनके बताए हुए दिशा निर्देश पर एक जगह अपनी गाड़ी को रोककर और कुछ भोजन का आर्डर दिया। यहाँ पर लौटते समय भोजन करने की व्यवस्था है किंतु यह नियम है कि जाते हुए आर्डर देकर जाना पड़ता है, हमने केवल चावल का आर्डर दिया और चाय पी, कुछ सामग्री हम साथ में रखे हुए थे, उसका भी आनंद लिया, अब हम चाय पीकर नाथूला की ओर रवाना हुए।

ठंड से बचने के लिए यहाँ पर जैकेट या गर्म कपड़े आदि भी किराए पर मिलते हैं। आगे बढ़ते हुए हमने जुड़वा झीलें देखीं, इनकी कहानी भी मिस्टर दावा ने बताई। रुई के पहाड़ों को देखकर रुकने का मन हुआ, मिस्टर दावा ने गाड़ी रोक कर कहा- सर यहाँ पर आप फोटोग्राफी कर सकते हैं। हम लोगों ने उतरकर फोटोग्राफी की और बर्फ के साथ अठखेलियां करने लगे, बहुत ही रमणीय और आनंददायक दृश्य देखने को मिला, और रुकने का मन कर रहा था, किंतु हमें नाथूला जाना था इसलिए हम नाथूला पास की ओर बढ़े। दावाजी ने बताया कि यह नाथूला पास 14,500 फीट की ऊंचाई पर है और यह मानसरोवर का रास्ता है। हमने नाथूला पास जाकर गाड़ी पार्क की और गाड़ी में ही मोबाइल कैमरा आदि रख दिए, क्योंकि ऊपर कैमरा और मोबाइल अलाउड नहीं है, उसके बाद में लगभग 128 सीढ़ियां चढ़कर हम ऊपर सैनिक एरिया में पहुंचे, जहाँ पर भारत और चीन का बॉर्डर है। वहाँ भारत के हिस्से में खड़े होकर हमने देखा कि यहाँ से कंचनजंगा की चोटी बर्फ से ढकी हुई रूई के पर्वत जैसी लगती है। यह सब देखकर मन रोमांच से भर गया। यहाँ का टेंपरेचर माइनस के नीचे ही पहुंच गया था, सांस लेने में परेशानी होती थी किंतु इच्छाशक्ति ऐसी थी कि हमें यह नजारा देखने के लिए अधीर कर रही थी। हम लोगों ने पुनः चाय पी, चाय पीने के बाद हमें पता चला कि यहाँ पर कमांडर साहब सर्टिफिकेट भी बनाकर देते हैं। यादगार के रूप में मैंने भी सर्टिफिकेट प्राप्त किया।

हम अपनी यात्रा पूर्ण कर वापस लौट रहे थे कि रास्ते में बाबा हरभजन सिंह जी का मंदिर देखा। हरभजन सिंह जी वीर सैनिक थे जो कि 1966 में भारतीय सेना में भर्ती हुए थे और दो साल बाद ही नदी में गिरने से उनकी मृत्यु हो गई थी, किंतु उन्होंने भारतीय जवानों को समय-समय पर चीन के खतरे से

आगाह किया इसलिए भारत सरकार ने 1986 में उनके नाम का यह बाबा हरभजन सिंह जी का मंदिर बनाया जो आज भी बना हुआ है यह देखकर मन आनंद से खिल उठा और भारतीय सैनिकों का सम्मान मेरे मन में और बढ़ गया। हमारे सैनिक तन-मन और धन से देश की सेवा में लगे हुए हैं। पास में ही एक सैनिक म्यूजियम हैं उसे देखने भी गए, यहाँ पर कुछ सैनिक तैनात थे उन सैनिकों के साथ हम ने हाथ मिलाया और निवेदन करने पर उनके साथ फोटोग्राफी भी की। सच में यह पल आनंद एवं रोमांच से युक्त था। यहां पर एक छोटा सा सैनिक म्यूजियम एवं मिनी थिएटर भी है, जिसमें सैनिकों का पूरा परिचय एवं घाटी की गतिविधियों के बारे में बताया जाता है। चूंकि जगह-जगह चित्र एवं फोटो लगे हुए थे किंतु वह सभी अंग्रेजी में ही थे मैंने वहां के इंचार्ज से निवेदन किया कि यह सब परिचय अंग्रेजी के साथ यदि हिंदी में भी लिखा जाए तो बहुत अच्छा होगा उन्होंने इस बात को स्वीकार कर आगे अमल में लाने की बात भी स्वीकारी।

लौटते हुए हमने त्सोंगो झील का आनंद लिया वहाँ पर सिक्किम की पोशाक पहनकर फोटोग्राफी की। पर्वतीय इलाके का मुख्य साथी याक के साथ फोटो खींचने में बड़ा आनंद आया। हम धीरे-धीरे आगे बढ़ रहे थे क्योंकि यहाँ दोपहर के बाद ऊपर रहने की अनुमति नहीं है इसलिए हम लोग भी समय के साथ गंगटोक की ओर रवाना हुए किंतु रास्ते में ही पानी के बादल इतने घने और इतने नीचे आ रहे थे कि हमें सामने का रोड भी दिखाई नहीं दे रहा था, मुझे कहीं कहीं थोड़ा डर भी लगने लगा किंतु हमारे साथ जो हमारे गाइड का काम कर रहे थे और गाड़ी भी ड्राइव कर रहे थे मिस्टर दावा वह आराम से गाड़ी चलाते हुए हमें गंगटोक सुरक्षित लेकर गए। अब हमने शाम का भोजन वगैरह करके फिर एमजी रोड पर घूमने का विचार किया और हम पुनः एमजी रोड पर रात में टहलने के लिए निकले। रोड पर ही हम लोगों ने गरम-गरम कॉफी का आनंद लिया दूसरे दिन फिर गंगटोक घूमने का प्रोग्राम बनाया।

दूसरे दिन ही गंगटोक दिल और मन में रच बस गया था। इसमें दो राय नहीं कि यह खूबसूरत शहर साफ सुथरा तो है ही, यहाँ के लोग भी मन से बड़े ही सरल, निश्छल और साफ सुथरे हैं। मैंने सिक्किम टूरिज्म के ऑफिस में भी बात की, इतने सरल, सहज व सहयोगी सरकारी अधिकारी भी हो सकते हैं, यह सिक्किम के लोगों से सीखा जा सकता है।

गंगटोक सिक्किम राज्य का सबसे बड़ा शहर है। गंगटोक पर्यटन स्थल बहुत ही आकर्षक, प्राकृतिक और बादलों में लिपटी हुई ऐसी जगह है जो यहाँ आने वाले पर्यटकों के दिल-दिमाग को तरोताजा कर देती है। बता दें कि सिक्किम की राजधानी गंगटोक से आपको कंचनजंगा का शानदार दृश्य दिखता है। गंगटोक सिक्किम राज्य का सबसे बड़ा शहर है जो पूर्वी हिमालय पर्वतमाला पर शिवालिक पहाड़ियों के ऊपर 1437 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। गंगटोक की घुमावदार पहाड़ी और सड़कें बहुत ही ज्यादा आकर्षक हैं। गंगटोक की सबसे खास बात यह है कि यह दुनिया की तीसरी सबसे ऊंची पर्वत चोटी कंचनजंगा पर्वत को देखने की अद्भुत जगह है।

नाथूला पास, भारत चीन सीमा, बाबा हरभजन सिंह जी का मंदिर और त्सोंगो झील के अलावा गंगटोक में एमजी रोड को गंगटोक का दिल कहा जाता है, यह

राजधानी का केंद्रीय शॉपिंग हब भी है। यह जगह धुएं, कूड़े और वाहनों के आवागमन से मुक्त है। इस जगह पर केवल पैदल यात्री ही आ सकते है और बड़े वाहनों को यहाँ अनुमति नहीं है। एम॰जी॰ रोड के दोनों तरफ की इमारतों को सरकार की हरी पहल के अनुरूप हरे रंग में सजाया हुआ है।

हनुमान टोक, गणेश टोक, रेशी हॉट स्प्रिंग्स, हिमालयन जूलॉजिकल पार्क, त्सुक ल खंग मोनेस्ट्री (मठ), भंजकरी जलप्रपात, कंचनजंगा गंगटोक, सेवेन सिस्टर्स वॉटरफॉल गंगटोक, पुष्प प्रदर्शनी केंद्र गंगटोक जैसी बहुत सी चीजों के साथ अन्य आकर्षणों में बान झाकरी, ताशी व्यू पॉइंट के नाम भी शामिल हैं। गंगटोक उत्तरी भारत में व्हाइट वाटर राफ्टिंग के लिए तीसरा सबसे अच्छा स्थान है जो पर्यटकों को यहाँ आने के लिए मजबूर करता है। गंगटोक में रोपवे का भी आनंद लिया जा सकता है झूलती हुई ट्रॉली में पूरे गंगटोक शहर को देखने का आनंद कुछ अलग ही होता है, जिसका लुत्फ हमने भी लिया।

गंगटोक शहर घूमने के उपरांत अगले दिन सुबह दार्जिलिंग के लिए रवाना हुए। गंगटोक से दार्जिलिंग की दूरी लगभग 100 किलोमीटर है। गंगटोक शहर से लगभग 28 किमी. चलने के बाद सिंगतम नाम की जगह से इठलाती- बलखाती तीस्ता नदी भी हमारे रास्ते के साथ-साथ चलना शुरू कर देती है। किनारे किनारे चलती हुई नदी के साथ हम चले जा रहे थे, अब हमें आगे के रास्ते के लिए गाड़ी बदलनी थी क्योंकि यहां से पश्चिम बंगाल की सीमा प्रारंभ होती है शायद यह तीस्ता बाजार गांव है यहाँ पर हम रुके। एक बहुत ही अच्छा साफ-सुथरा रेस्टोरेंट मिला जिसमें हमने गरमा-गरम जलेबी और हलवा खाया और चाय पी। अब आगे तीस्ता बाजार नामक जगह से दार्जीलिंग वाले मोड़ पर मुड़ने के साथ ही तीस्ता नदी का साथ खत्म हो गया और पहाड़ों की खतरनाक घुमावदार चढ़ाई शुरू हो गयी। वाकई में यह रास्ता बहुत ही खड़ी चढ़ाई वाला और रास्ता ऐसा कि गाड़ी का दम ही फूल जाए। मार्ग में हरे-भरे पेड़-पौधों की प्रचुरता से उत्पन्न होते सुन्दर दृश्य मन मोह लेने वाले थे। पहाड़ की उंचाई पर पहुँचने के बाद सड़क के दोनों तरफ के दृश्य और भी खूबसूरत और मनमोहक लगने लगे क्योंकि अब दोनों तरफ चाय के बागान, फलों के बाग-बगीचे नजर आने लगे थे। हमारे वाहन चालक ने इस पूरे रास्ते का इतिहास बताया, गाड़ी चलाते हुए वह हमें चाय बागानों के बारे में बताते जा रहे थे तथा रास्ते के चाय बागान भी दिखाते जा रहे थे वह सचमुच बहुत ही सुन्दर दृश्य था।

दार्जिलिंग की उत्पत्ति दो तिब्बती शब्दों दोरजे (Dorje) और लिंग (Ling) से हुई है। दोरजे वज्र (Thunderbolt) का प्रतीक है जबकि लिंग का अर्थ है क्षेत्र या स्थान (Area Or Spot)। इसलिए दार्जिलिंग आकाश में वज्रपात होने या तेज बिजली चमकने के लिए प्रसिद्ध है।

अब हम दार्जिलिंग पहुँच चुके थे, सड़क के किनारे छोटी टॉय ट्रेन के नजारे से मन प्रसन्न हो गया। दार्जिलिंग रेलवे अपने दो फुट नैरो गेज ट्रैक के कारण "टॉय ट्रेन" के नाम से प्रसिद्ध है। टॉय ट्रेन की सवारी की सुविधा सिर्फ दार्जिलिंग में ही उपलब्ध है जिसके कारण यह विशेष माना जाता है। टॉय ट्रेन बेहद धीमी गति से चलती है जिससे आप दार्जिलिंग की सुंदरता और प्राकृतिक दृश्यों को अच्छे से निहार सकते हैं।

आपको बता दें कि दार्जिलिंग हिमालयन रेलवे को 1919 में यूनेस्को ने विश्व धरोहर घोषित किया था।

दार्जिलिंग में चौरस्ते के पास में भूमसेंग होटल में ठहरा कर ड्राइवर ने हमें सुबह 4:00 बजे तैयार रहने को कहा क्योंकि हमें टाइगर हिल पर उगते हुए सूर्य का नजारा देखना था। टाइगर हिल के साथ ही बतासिया लूप और यिगा चोलंग बौद्ध मठ दिखाया जाता है। यहाँ सुबह का नजारा बड़ा ही मन मोहक होता है।

दार्जिलिंग में टाइगर हिल से आप कंचनजंगा पर्वत के शीर्ष पर सूरज की पहली किरण से टकराने का विस्मयकारी दृश्य देख सकते हैं। उगते सूरज के खूबसूरत नजारे के साथ ही यह बर्फ के बदलते रंगों के लिए भी प्रसिद्ध है। दार्जिलिंग में एक ऐतिहासिक वेधशाला पहाड़ी पर स्थित है और आप इस पहाड़ी की चोटी से नेपाल, भूटान, तिब्बत और सिक्किम की झलक भी देख सकते हैं।

दार्जिलिंग में समय के हिसाब से और भी जगह घूमी जा सकती है जैसे- हिमालयन पर्वतारोहण संस्थान और प्राणी उद्यान, रोपवे, तेनजिंग रॉक, रॉय विला, छोटा रंगनीत टी एस्टेट, तिब्बती शरणार्थी स्वयं सहायता केंद्र, लेबोंग स्टेडियम जापानी मंदिर, लाल कोठी, अवा आर्ट गैलरी, धीरधाम मंदिर, प्राकृतिक इतिहास संग्रहालय, रॉक गार्डन, गंगामाया पार्क आदि।

चाय प्रेमियों के लिए दार्जिलिंग एक स्वर्ग है। समय रहने पर आप हैप्पी वैली टी एस्टेट जैसे विशाल चाय बागानों की भी सैर कर सकते हैं। आप दार्जिलिंग के स्थानीय लोगों के साथ दोस्ताना व्यवहार करके यहाँ की सम्पदाओं के आसपास की असंख्य कहानियों और भूतों की कहानियों को सुन सकते हैं। यहाँ आकर खुशबूदार दार्जिलिंग चाय की एक चुस्की लेना लोग कभी नहीं भूलते। हमने भी बागान की सैर के बाद गरमा-गरम चाय का आनंद लिया और कुछ चाय के पैकेट भी खरीदे। हमारे ड्राइवर ने बताया कि यहाँ अस्सी हजार रुपये किलो तक की चाय मिलती है।

दार्जिलिंग संस्कृतियों और धर्मों दोनों में बहुत विविध है। जिसके कारण यहाँ का बाजार बहुत विस्तृत है। आप दार्जिलिंग से स्थानीय हस्तकला, मौजूदा संस्कृतियों के विभिन्न कपड़े, बौद्ध कलाकृतियाँ, तिब्बती कालीन और बहुत कुछ खरीद सकते हैं। दार्जिलिंग की चाय तो प्रसिद्ध है ही। दोनों दिन ही यहां के चौरस्ता मार्केट का लुफ्त उठाया और खरीदारी की।

अगले दिन सुबह सुबह हमें दार्जिलिंग से बागडोगरा एयरपोर्ट जाना था क्योंकि हमारी फ्लाइट दोपहर दो बजे की थी इसलिए हम सुबह ही सिलीगुड़ी के रास्ते बागडोगरा के लिए रवाना हुए। रास्ते में मनमोहक टी गार्डन और ऊंचे घने वृक्षों आदि का फिर आनंद उठाया। इस तरह फिर दिल्ली से कनेक्टिंग फ्लाइट लेकर लगभग आठ बजे रात्रि मुम्बई आ गए। सच में यात्रा से मन चंगा और प्रसन्न होता है एक तरह की स्फूर्ति एवं सकारात्मक ऊर्जा से मन भर जाता है।

■■■

'ल्हारदे' लोक-कथा

-डॉ॰ उर्मिला सैनी

राजस्थान के शेखावाटी क्षेत्र की लोक कथाओं में वीरता की कथाएँ सर्वाधिक प्रसिद्ध हैं। इन लोक कथाओं ने लोक हृदय पर अधिकार कर लिया है, उनमें से प्रमुख इस प्रकार हैं- उठणों पिरथराज, जगदेव पंवार, कहवार सरवहियो, सुलतान, गूगो चौहाण, पाबू राठौड़, ल्हारदे, सोनचीड़ी का सूंण आदि वीरता की कहानियों की कोई सीमा नहीं है। इनमें से 'ल्हारदे' नामक कहानी उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत की जा रही है, जिसमें नारी का तेजस्वी रूप दृष्टिगोचर होता है-

ठाकुर अलसी के पुत्र उत्पन्न न होकर बल्कि एक पुत्री पैदा होती है, जिसका नाम 'ल्हारदे' होता है। यद्यपि ठाकुर बहुत बीमार हो जाते हैं लेकिन वे कहते हैं कि टोडरमल का गीत गवाए बिना और गुजरात के मूंगधड़े का घोड़ा लाये बिना मेरे प्राण नहीं निकलेंगे। पिताजी के ये वचन सुनकर ल्हारदे ये दोनों काम करने का बीड़ा उठाती है। वह अकेली ही लड़की होने के बावजूद मर्दो का वेश धारण कर घोड़े पर सवार होकर जाती है। रास्ते में उसे एक ठाकुर मिलता है, वह भी मूंगधड़े का घोड़ा लाने ही जा रहा था। फिर ये दोनों बहादुरी से मूंगधड़े का घोड़ा ले आते हैं। इस दौरान रास्ते में ठाकुर को पता चलता है कि वह लड़की है। वह ल्हारदे के तेजस्वी रूप पर मोहित होकर विवाह का प्रस्ताव रखता है। लेकिन ल्हारदे शादी के लिए शर्त रखती है कि मैं दूल्हा बनूंगी और तुम दुल्हन। ठाकुर यह प्रस्ताव स्वीकार कर लेता है। जब ल्हारदे बारात लेकर ठाकुर के यहाँ वर पक्ष की भूमिका निभाती है तब 'टोडरमल' गीत गाया जाता है। इस प्रकार 'ल्हारदे' लड़की होने के बावजूद भी तेजस्विता और वीरता से अपने पिताजी की दोनों इच्छाएँ पूर्ण करती है। इतना ही नहीं सभी लोग उस पर गर्व करते हैं।

कई महीनों के बाद ल्हारदे के यहां पुत्र रूपी रत्न पैदा होता है। वह एक दिन शावक (शेर का बच्चा) को हाऊ (बिल्ली का बच्चा) समझकर पकड़ लाता है और अपनी माँ से कहता है कि- माँ, मैं हाऊ पकड़ लाया हूँ। उसकी माँ कहती है यह तो शावक है, इसे पुनः वन में छोड़कर आओ। वह ऐसा ही करता है इस पर नगर के लोग कहते है -

''सिघणी कै तो सिंघ ही जलमै।''

इसी संबंध में एक दोहा भी प्रचलित है-

''बेटे सूं बेटी भली, जे कोई होय सपूत।
अष्ठसी के ल्हारदे ना होती, अळसी जातो ऊत''

■■■

भाषाई वैविध्य के मध्य पूर्वोत्तर में हिंदी के पुरोधा

–विश्वजीत मजूमदार

करीब दो दशक पुरानी बात है। सन् 2000 में असम राष्ट्रभाषा सेवक संघ के निमंत्रण पर उनके 32 वें वार्षिक अधिवेशन में असम विश्वविद्यालय, सिलचर के प्रोफेसर एवं अध्यक्ष (हिंदी विभाग) डॉ॰ जगमल सिंह जी के साथ मैं अतिथि वक्ता के रुप में लखीपुर, कछार गया हुआ था। इस सुदूर अंचल में भी हिंदी के प्रति आम जनता का जो अद्‌भुत लगाव मुझे तब देखने को मिला, वह अवर्णनीय है।

फूलों की वर्षा के साथ स्थानीय जनगण हम अतिथियों के नाम के जयकारे लगा रहे थे। हिंदी में मेरे भाषण के बाद जब मंच संचालक ने मेरे संबंध में यह कहा कि मैं दरअसल बांग्ला भाषी हूँ तो पूरा हॉल एक बार पुन: जोरदार करतल ध्वनि से गुंजायमान हो गया।

सभागृह में उपस्थित लोगों में हमारे प्रति अत्यंत श्रद्धा का भाव दृष्टिगोचर हो रहा था। उस समय मंच पर मेरे बगल में बैठे एक बांग्ला भाषी सरपंच ने आहिस्ते से मुझसे कहा– "सर, आज मुझे जो भी सम्मान मिल रहा है, वह इसी हिंदी की वजह से ही मिला है। यहां तक कि पूर्वोत्तर के किसानों के प्रतिनिधि के रुप में भी मैंने तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी जी से बातचीत की थी।'' फिर उन्होंने वह मजेदार वाकया सुनाया, जो किसी भी हिंदी सेवी के मन में उत्साह भर देगा। उन्होंने कहा– "एक बार पूर्वोत्तर के सैकड़ों किसानों का प्रतिनिधि मंडल नई दिल्ली में किसान सम्मेलन में गया हुआ था। स्वयं प्रधानमंत्री राजीव गांधी जी बिना किसी दुभाषिए की मदद लिए किसानों से सीधे वार्तालाप करना चाहते थे पर मुश्किल संपर्क भाषा की थी क्योंकि पूर्वोत्तर के किसान नेताओं को न ठीक से अंग्रेजी आती थी और न ही हिंदी बोल सकते थे अत: प्रधानमंत्री के निजी सचिव ने पूछा कि क्या आप में से कोई हिंदी बोल सकता है? मैंने हाथ उठाया तो मुझे पूर्वोत्तर के किसानों का प्रतिनिधि बनाकर राजीव गांधी जी से बातचीत करने का सुअवसर मिला। मैंने स्वप्न में भी कभी नहीं सोचा था कि मुझ जैसा अदना सा किसान समस्त पूर्वोत्तर के किसानों का प्रतिनिधि बनकर देश के प्रधानमंत्री से हाथ मिला कर बातचीत कर सकेगा। यह सम्मान मुझे हिंदी ने दिया है। मैं इस भाषा के प्रति कृतज्ञ हूं।''

यह तो एक दृष्टांत मात्र है। पूर्वोत्तर में ऐसे अनेक हिंदी सेवी हुए हैं जिन्होंने विपरीत परिस्थितियों में भी हिंदी को आगे ले जाने का काम किया है। राष्ट्रभाषा विद्यापीठ, सिलचर के पूर्व प्राचार्य स्वर्गीय दत्तात्रेय मिश्र जी भी उन्हीं में से एक थे। सन् 1998 में जब पहली बार मैं उनसे मिला तो बातों के दरम्यान पता चला कि वे किशोरावस्था से ही हिंदी प्रचारक के रुप में बराक वैली में कार्यरत रहे हैं। गैर हिंदी भाषियों को हिंदी सिखाने का उनका ऐसा जुनून था कि स्थानीय सांसद एवं पूर्व केंद्रीय मंत्री स्व. संतोष मोहन देव के पिता स्व॰ शतीन्द्र मोहन देव, जो स्वयं पूर्वोत्तर के बड़े स्वाधीनता संग्राम सेनानी थे, को हिंदी सिखाने के लिए

उनके साथ सुबह की सैर पर जाया करते थे, क्योंकि देव साहब की व्यस्त दिनचर्या में से यही एक पल था जो वे हिंदी सीखने के लिए मिश्र जी को दे सकते थे। कर्मठ 80 वर्षीय मिश्र जी मुझे उस समय हँसकर बताने लगे कि कभी कभी उनके साथ जॉगिंग या दौड़ भी लगानी पड़ती थी हिंदी सिखाने के लिए।

पूर्वोत्तर की सुरम्य वादियों में सांस्कृतिक भिन्नता के बीच भाषाई विविधता का भी विशेष महत्व है। "कोस कोस में पानी बदले, चार कोस में वाणी" की कहावत यहां सच्चे अर्थों में चरितार्थ होती दिखती है। असम में जहां मुख्यत: असमिया भाषा का ही प्रभुत्व है, वहीं जैसे-जैसे हम पूर्वोत्तर के सुदूर अंचलों में प्रवेश करते हैं, खान-पान, रहन-सहन, वेशभूषा और भौगोलिक परिवेश बदलने के साथ ही भाषा भी अपना रंग रूप बदलने लगती है।

मेघालय में गारो, खासी, जयंतिया नामक तीन प्रमुख जनजातीय भाषाएं हैं, इसी तरह सिक्किम में नेपाली भाषा के अतिरिक्त लेप्चा, लिंबू, तामांग और भोटिया बोली जाती है। नागालैंड में नगा भाषाएं जैसे अंगामी, सेमा, लोथा, आओ, तेनीदिए, नगामिज इत्यादि का प्रचलन है। अरुणाचल में वांगचो, मणिपुर में माओ, मणिपुरी, जिमी, कबूई आदि का प्रचलन है। असम में असमिया भाषा प्रधान होते हुए भी अनेक अन्य जनजातीय भाषाओं/बोलियों का भी प्रयोग होता है। कछारी भाषा के नाम से बोडो सोनोवाल और सिलेटी बंगला का भी अंचल विशेष में प्राधान्य है। सुदूर अरुणाचल में दो दर्जन से अधिक भाषाओं/बोलियों का प्रचलन है, जिसमें जेमी, अका, आदी, मोंपा, मिसिंग, मोन्ना आदि प्रमुख हैं। त्रिपुरा में बांग्ला और असमिया के अतिरिक्त काकबराक बोलने वालों की संख्या सर्वाधिक है। हालांकि कुछ लोग संथाली, चकमा और विष्णुप्रिया मणिपुरी भी बोलते हैं।

इस बहुभाषी अंचल में जब एक साथ इतनी भाषाओं और बोलियों का समागम हो तो सहज ही प्रश्न उठता है कि अन्य राज्यों से आने वाले पर्यटकों, व्यापारियों या नौकरीपेशा लोगों, स्थानीय लोगों से संवाद की भाषा क्या होनी चाहिए? इसका उत्तर है- हिंदी। लेकिन ऐसा तभी संभव है जब हिंदी को सर्व स्वीकृति मिल जाए। ऐसा होने पर इन आठ प्रदेशों के लोगों को भी आपसी मेलजोल और वैचारिक आदान-प्रदान में अत्यंत आसानी होगी।

आज भी असमिया या बांग्ला यहां संपर्क भाषा के रूप में स्थापित नहीं हो पाई है। पूर्वोत्तर से बाहर आने-जाने पर भी उनके लिए संपर्क भाषा की समस्या बनी ही रहती है, इसके उलट हिंदी को अपनाने पर न केवल पूर्वोत्तर में बल्कि उसके बाहर आने जाने पर भी उनको आसानी होगी। इसका सबसे बड़ा सबूत यह है कि यहां के दो पहाड़ी जिलों कार्बी आंगलोंग एवं दीमा हसाओ के लोग जब भी अपने अंचल से बाहर जाते हैं तो हिंदी का ही सहारा लेते हैं। असम की उत्तर कछार पहाड़ी जिले दीमा हसाओ का जिला मुख्यालय का हाफलाँग है, उसी के नाम पर वहां "हाफलोंगी हिंदी" बोली जाती है। हाफलोंगी की हिंदी सही मायनों में हिंदी के उस भव्य रूप के दर्शन करवाती है जिसमें भाषा विशेष की व्याकरण की जटिलताओं से मुक्त सभी प्रदेशों की भाषा, बोली, संस्कृति और शब्दावली को सहजता से अंगीकृत करने की विस्मयकारी अंतर्निहित क्षमता है। इसकी एक झलक इन वाक्यों में देखने को मिलती है-

हाफलोंग हिंदी – तुमको मायरोंग लेकर आया।
भावार्थ– मैं तुम्हारे लिए चावल लेकर आया।
हाफलोंग हिंदी– तुम्हारा कुत्ता हमको कामराया।
भावार्थ– तुम्हारे कुत्ते ने मुझे काटा।
हाफलोंग हिंदी– तुम कहां जाएगा?
भावार्थ– तुम कहां जाओगे ?
हाफलोंग हिंदी– हम आगे गिरेगा।
भावार्थ– मुझे आगे (अगले पड़ाव पर) उतार दें।

यह भाषा उत्तर कछाऱ् की 11 (ग्यारह) जनजातियों जैसे हमार, दिमासा, कुकिंग, कार्बी, जयंतिया आदि के बीच आपसी संवाद की सहज भाषा है। यह इतनी सहज है कि एक हफ्ते में सीखी जा सकती है।

अंग्रेजों के शासन् काल में जब पूरा अखंडित पूर्वोत्तर असम, त्रिपुरा और मणिपुर राज्यों के अंतर्गत ही आता था तब भी हिंदी वहाँ धीरे-धीरे फैल रही थी। अंग्रेजों ने असम के चाय बागानों में श्रमिकों की कमी को पूरा करने के लिए उत्तरप्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश, ओडिसा आदि राज्यों से बड़ी संख्या में गरीब कामगारों को रुपए पैसे और रहने खाने का लालच देकर यहां लाया गया था और फिर चाय बागानों के अंग्रेज मालिक और मैनेजरों की सांठगांठ से कॉन्ट्रैक्ट के अधीन उन्हें गुलाम बनाकर लंबे समय तक शोषण किया गया। ऐसे श्रमिकों की कई पीढ़ियां यहां पली-बढ़ी जो मुख्यत: हिंदी भाषी प्रदेशों से ही संबंधित थी लेकिन बांग्ला और असमिया वे आसानी से बोल सकते थे। तब चाय बागान के प्रवासी मजदूरों में अपनी मातृभाषा या बोली को लेकर एक प्रकार की कुंठा घर कर गई थी। उन्हें लगता था कि अपनी मातृभाषा (हिंदी/भोजपुरी/अवधी/ब्रज आदि) में सार्वजनिक स्थलों पर बात करने से कहीं उन्हें अपमानित न होना पड़े। कहीं स्थानीय लोग उन्हें चाय बागान के गुलाम श्रमिक समझ कर उनसे भेदभाव न करें। इसलिए स्थानीय भाषाओं को सीखना और उनको ही व्यवहार में लाना उनकी मजबूरी रही होगी। संभवत: यही कारण रहा कि ऐसे प्रवासी मजदूरों की परस्पर संपर्क भाषा हिंदी होते हुए भी पूर्वोत्तर में हिंदी का प्रचार-प्रसार उतनी द्रुतगति से नहीं हो सका जैसा होना चाहिए था।

असम में हिंदी के प्रचार प्रसार का इतिहास काफी दिलचस्प है। कहा जाता है कि जोरहाट के तत्कालीन पुलिस अधीक्षक श्री यज्ञराम खारधीया फुकन ने 1832 में "समाचार दर्पण" में असम के लोगों को बांग्ला भाषा के बजाय हिंदी सीखने पर जोर देते हुए हिंदी शिक्षण ग्रंथ रचने की आवश्यकता पर एक लेख "हिंदी व्याकरण और अभिधान" शीर्षक से प्रकाशित कराया था। उनके असमय परलोकवास से ग्रंथ रचना की उनकी इच्छा भले ही पूरी नहीं हुई हो पर 1926 में असम के सभी विद्यालयों में हिंदी पढ़ाने की व्यवस्था श्री भुवन चंद्र गोगोई के प्रयासों से अवश्य शुरू हो गई। कालांतर में अनेक स्वयंसेवक और हिंदी प्रचारक पूर्वोत्तर में हिंदी के प्रचार-प्रसार एवं अध्यापन कार्य के लिए मुखर हुए और यहाँ हिंदी विद्यापीठ/हिंदी प्रचार सभा आदि की भी स्थापना हुई। असम में 1934 में "अखिल भारतीय हरिजन सभा" की स्थापना हेतु महात्मा गांधी जी स्वयं पधारे थे। उस समय माजुली के वैष्णव धर्मगुरु एवं प्रख्यात स्वाधीनता संग्राम सेनानी श्री पीतांबर देव गोस्वामी जी ने उन्हें यहां हिंदी प्रचार आंदोलन शुरू करने का आग्रह किया था। उनके आग्रह

पर ही बाबा राघवदास जी को असम में हिंदी प्रचारक बनाकर गांधीजी ने पूर्वोत्तर में हिंदी को प्रचारित करने का दायित्व सौंपा था। बाद में बाबा राघव दास जी के आश्रम में प्रशिक्षित उनके तीन शिष्य श्री रजनीकांत चक्रवर्ती, श्री हेमकान्त भट्टाचार्य एवं श्री नवीन चंद्र कलिता राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा द्वारा संचालित "हिंदी अध्यापन मंदिर" से प्रशिक्षित होकर लौटे और क्रमशः असम के शिवसागर, गुवाहाटी और नगांव शहरों में हिंदी प्रचारक का दायित्व निर्वहन किया।

सन् 1938 में असम हिंदी प्रचार समिति की गुवाहाटी में स्थापना हुई जो आज "असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति" के नाम से जानी जाती है।

धीरे-धीरे पूर्वोत्तर के अन्य राज्यों में भी हिंदी शिक्षण प्रशिक्षण की व्यवस्था शुरू हुई। पूर्वोत्तर भारत में आजकल ऐसी कई सरकारी / गैर सरकारी / अनुदान प्राप्त संस्थाएँ हैं,जो हिंदी के प्रचार-प्रसार का पुनीत कार्य कर रही हैं, जैसे- गुवाहाटी (असम) में असम राष्ट्रभाषा समिति, केन्द्रीय हिंदी संस्थान, राजकीय हिंदी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, जोरहाट में असम राज्य राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, आइजोल में राजकीय हिंदी शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान, इंफाल (मणिपुर) में राजकीय हिन्दी शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान, मणिपुर राष्ट्रभाषा प्रचार समिति आदि। इनके अतिरिक्त गुवाहाटी विश्वविद्यालय, असम विश्वविद्यालय, सिलचर मणिपुर विश्वविद्यालय, नॉर्थ ईस्टर्न हिल यूनिवर्सिटी (नेहु) शिलांग, तेजपुर विश्वविद्यालय, मिजोरम विश्वविद्यालय, आइजोल, डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय, त्रिपुरा विश्वविद्यालय, अगरतला, सिक्किम मणिपाल विश्वविद्यालय, गंगटोक, राजीव गांधी विश्वविद्यालय, ईटानगर आदि में भी कहीं-कहीं हिंदी में उच्च शिक्षा की व्यवस्था भी है।

1947 में जब भारत स्वतंत्र हुआ तब पूर्वोत्तर में मात्र असम, मणिपुर और त्रिपुरा- ये तीन ही राज्य अस्तित्व में थे। बाद में इन्हीं राज्यों का विभाजन कर क्रमशः चार और नए राज्य बने- नागालैंड, मिजोरम, मेघालय और अरुणाचल प्रदेश। त्रिपुरा के पत्रकार स्वर्गीय ज्योति प्रसाद सैकिया ने अपनी पुस्तक में पूर्वोत्तर को पहली बार "सात बहनें" कहकर उल्लेखित किया था। हालांकि बाद में सिक्किम राज्य का गठन होने के बाद अब यह संख्या आठ हो गई है। जनजाति बहुल पूर्वोत्तर में बोली जाने वाली अनेक भाषाओं यथा बोडो, कछारी, खासी, जयंतिया, मिजो, कोच, त्रिपुरी, गारो, दिमासा, कार्बी, निशी, आदी, आपातानी, रियांग, देउरी, हाफलोंगी इत्यादि में से तीन भाषाओं को ही संविधान की अष्टम अनुसूची में स्थान प्राप्त हुआ है। ये भाषाएं हैं - असमिया (26 जनवरी, 1950 को संविधान लागू होने के समय से), मणिपुरी (संविधान के 71 वें संशोधन द्वारा सन् 1992 में जोड़ा गया)और बोडा (संविधान के 92 वें संशोधन द्वारा सन् 2004 में अधिसूचित)।

हिंदी शिक्षण योजना के सिलचर केंद्र में कार्यरत रहने के दौरान केंद्रीय हिंदी संस्थान, गुवाहाटी के तत्कालीन क्षेत्रीय प्रभारी डॉ॰ हेमराज मीणा के बुलावे पर मुझे धर्मनगर (त्रिपुरा) के कार्यक्रम में भी जाने का अवसर मिला था। वहां के हिंदी प्रचारको एवं हिंदी शिक्षकों के लिए हिंदी प्रशिक्षण कार्यक्रम में मुझे

एक व्याख्यान देना था। मेरे साथ होटल में मणिपुर के वरिष्ठ हिंदी सेवी आचार्य राधा गोविंद जी थोङगम भी ठहरे हुए थे, जब मैंने उनसे थोङगम का अर्थ पूछा तो जाने अनजाने में असम और मणिपुर के साथ उत्तर भारत के सांस्कृतिक धार्मिक और भाषाई संबंध के न जाने कितने ही प्रसंगों पर लंबी बातचीत हुई।

रामायण काल में मर्यादा पुरुषोतम राम के "गुरु वशिष्ठ" असम के ही रहने वाले थे। परिणामस्वरूप अभी भी गुवाहाटी में वशिष्ठ आश्रम है। कहा जाता है कि महाभारत के समय भीम भी यहाँ आए थे। उसी समय उन्होंने मणिपुर की 'हिडिम्बा' से विवाह किया था। भीमकाय 'घटोत्कच' उन्हीं के पुत्र थे, जिसके पराक्रम की गाथा महाभारत में वर्णित है। श्रीमंत शंकरदेव जिन्हें असमिया जाति, सभ्यता एवं संस्कृति का प्राणतत्व माना जाता है, आचार्य राधा गोविंद जी ने बताया कि दरअसल उनके पूर्वज भी उतर प्रदेश से यहाँ बसे थे।

पहले उनके पितामह मथुरा, वृंदावन में पुरोहिताई का कार्य करते थे। बाद में बंगाल राज्य में पुरोहित बनकर आ गए। जब बंगाल के राजा ने अपनी पुत्री का विवाह मणिपुर के राजकुमार से करवाया तो राजकुमारी की विदाई के समय दास-दासियों, खानसामों के साथ पुरोहितों के एक दल को भी बेटी के ससुराल अर्थात मणिपुर भेजा गया। मणिपुर के राजा ने उनके पिता को राजपुरोहित का दर्जा देकर अपने राज्य में ही बसा लिया और "थोङगम" की उपाधि दी। इस प्रकार 'थोङगम' अर्थात राजपुरोहित उनके कुलनाम का पर्याय बन गया। उन्होंने बताया कि मणिपुर में हिंदी के प्रचार प्रसार में सक्रिय रहने के कारण ही भारत सरकार ने उन्हें मणिपुर के हिंदी सलाहकार के रूप में केंद्रीय हिन्दी सलाहकार समिति में भी शामिल किया था और आज उन्हें जो भी प्रतिष्ठा मिली है वह हिंदी की ही बदौलत है।

पूर्वोत्तर में जिन हिंदी प्रेमियों ने निस्वार्थ भाव से हिंदी की सुदीर्घ सेवा की है उनमें श्री अशोक कुमार वर्मा जी का नाम भी विशेष रूप से उल्लेखनीय है। वे करीब पांच दशक से कछार घाटी में हिंदी की निष्काम सेवा कर रहे हैं। सन् 1998 से 2001 तक सिलचर में पदस्थ रहने के दौरान मेरा उनसे आत्मीय संबंध रहा। सन् 1969 से वे हिंदी में "बालार्क" नामक पत्रिका का नियमित प्रकाशन कर रहे हैं। उनका बालार्क प्रकाशन, सिलचर पिछले चार दशकों से सैकड़ों स्थानीय कवियों/लेखकों की पांडुलिपियों का प्रकाशन करता आया है, वह भी बिना किसी सरकारी आर्थिक सहयोग के। हिंदी का ऐसा अनन्य समर्पित सेवक मैंने पहले कभी नहीं देखा।

करीब 75 वर्ष की आयु 21 काव्य ग्रंथ, एक उपन्यास, लंदन प्रवास पर एक यात्रा वृतांत और अनेक अनुदित ग्रंथ तो हैं ही, हिंदी में भी उनके द्वारा रचित 07 काव्य ग्रंथ हैं और करीब 20 काव्य संकलनों का बांग्ला से हिंदी में अनुवाद है। बालार्क प्रकाशन से उनके संपादन में प्रकाशित कुछ ग्रंथों के नाम इस प्रकार हैं- धारा बराक की, उपेक्षित स्वर बराक के, बनफूल, चतुरंग, हम भारत की बेटी हैं (दो भागों में, काव्य संकलन), सब्ज लहर के लोग (दो भागों में,कथा संकलन)। हाल ही में उनकी एक संपादित काव्य कृति

"जनपद की कविता" भी प्रकाशित हुई है। इसके संपादकीय में उन्होंने लिखा है–

"प्रस्तुत संकलन सबसे बड़ा है, इसमें "बालार्क" में दीर्घ 50 से भी अधिक साल से प्रकाशित कविताओं में से चुन चुन कर कुछ कविताओं को समावेशित किया गया है। कुछ कवि घाटी के नहीं है पर वे अस्थाई रूप से उन दिनों यहां रहते थे और बालार्क में अपनी रचना प्रकाशन हेतु देकर उसका गौरव बढ़ाया था। यह रचना संकलन बेंगलुरु में किया गया है इसलिए कुछ महत्वपूर्ण व्यक्तियों की रचनाएं इसमें संकलित नहीं कर पाए, उन महानुभावों से क्षमा प्रार्थी हूं।"

करीब 150 साल पहले श्री अशोक वर्मा जी के दादाजी चाय बागान में श्रमिक बनकर कछार घाटी में आए थे उनके पिता स्वर्णकार थे। श्री अशोक वर्मा जी की शिक्षा दीक्षा यहीं हुई। बी.एस-सी., बी.टी. तथा एम.ए. की शिक्षा पूरी करने के बाद वे स्थानीय नरसिंह हायर सेकेंडरी स्कूल, सिलचर में शिक्षक पद पर नियुक्त हुए और वहीं से प्राचार्य पद से सेवानिवृत्त हुए। सेवानिवृत्ति के बाद भी उनकी कर्मठता में कोई कमी नहीं आई और न ही लेखन में ही शिथिलता आई। आज भी वे अनवरत साहित्य साधना में तल्लीन है।

जब मैंने उनसे पूछा कि सुदीर्घ 50-55 वर्ष की हिंदी सेवा के एवज में आपको शासकीय या गैर शासकीय स्तर पर क्या-क्या सम्मान/अवार्ड इत्यादि मिले? तो उनका अत्यंत सादगी पूर्ण उत्तर था– "मुझे कई संस्थाओं ने पुरस्कृत करना चाहा था पर मैं हमेशा उसे लेने से इनकार करता रहा। मेरा मानना है भाषा "मां" है, भाषा की सेवा करना मां की सेवा है, इसके लिए पुरस्कार या सम्मान कैसा? संतान हूँ, अपनी माँ की सेवा करना मेरा धर्म है।"

उनके कृतित्व पर पी०एच०डी० की उपाधि के लिए थिसिस लेखन हेतु भी एक छात्रा ने असम विश्वविद्यालय, सिलचर से पंजीकरण कराया था, उनकी धर्मपत्नी श्रीमती अन्नपूर्णा देवी भी असमिया बांग्ला और हिंदी में काव्य रचनाएं करती हैं। असमिया में उनका एक काव्य संग्रह भी प्रकाशित हो चुका है। श्री अशोक वर्मा जी के व्यक्तित्व का एक विशिष्ट पहलू यह भी है कि भले ही वे स्वयं कोई सम्मान या अवार्ड इत्यादि लेने से हिचकते हों पर विगत दो दशकों से हर साल अपने पिता स्वर्गीय ठाकुर प्रसाद जी की स्मृति में स्थानीय हिंदी साहित्यकारों में से चयनित किसी एक साहित्यकार को साहित्य पुरस्कार तथा अपनी माता स्वर्गीय चंद्रावती देवी जी की स्मृति में किसी स्थानीय बांग्ला भाषी साहित्यकार को प्रतिवर्ष सम्मानित करते आए हैं। यहां तक कि वे जिस विद्यालय से सेवा मुक्त हुए, उसके गरीब विद्यार्थियों को भी यथा सामर्थ्य आर्थिक मदद करने के साथ ही उच्च माध्यमिक, माध्यमिक और प्राथमिक स्तर के प्रतिभावान विद्यार्थियों को भी स्वयं के खर्चे पर पुरस्कृत करते आए हैं।

ऐसे निष्काम सेवा भावी हिंदी प्रेमियों के अथक प्रयासों से ही आज पूर्वोत्तर में हिंदी अपनी जड़ें मजबूत कर रही है जो पूर्वोत्तर को शेष भारत से अखंड रूप में जोड़े रखने में सहायक सिद्ध हुई है।

लघु नाटक

हिंदी की बिंदी

पात्र-

-विक्रम सिंह

1. निर्धारण अधिकारी
2. निर्धारिती
3. हिंदी अधिकारी
4. निर्धारण अधिकारी के पिता
5. दो कर्मचारी

दृश्य -1 : आयकर कार्यालय - निर्धारण अधिकारी का कमरा एवं निर्धारिती का प्रवेश

निर्धारिती – क्या मैं अंदर आ सकता हूँ साहब?

निर्धारण अधिकारी – Yes come in

निर्धारिती – साहब मुझे निर्धारण अधिकारी से मिलना है।

निर्धारण अधिकारी – What? किससे मिलना है?

निर्धारिती – जी! निर्धारण अधिकारी से।

निर्धारण अधिकारी – यहाँ तो कोई निर्धारण अधिकारी नहीं है। मैंने तो ये नाम कभी नहीं सुना।

निर्धारिती – साहब, ये आयकर कार्यालय ही है न?

निर्धारण अधिकारी – जी हाँ, ये आयकर कार्यालय ही है।

निर्धारिती – पता तो यहीं का दिया था।

निर्धारण अधिकारी – आप एक काम कीजिए – यहाँ हिंदी से Related सारे काम AD(O.L.) विक्रम सिंह जी करते हैं। आप Room No 24 में चले जाइए। वहाँ एक सरदार जी बैठे होंगे। वही हमारे AD(O.L.) हैं। आप उनसे मिल लीजिए।

निर्धारिती – (हाथ जोड़कर) धन्यवाद साहब!

यवनिका

दृश्य -2 : हिंदी अधिकारी का कमरा - निर्धारिती का प्रवेश

निर्धारिती – क्या मैं अंदर आ सकता हूँ साहब?

हिंदी अधिकारी – जी हाँ, आइए, बैठिए!

निर्धारिती – जी, मुझे निर्धारण अधिकारी से मिलना है।

हिंदी अधिकारी – वो तो कमरा नंबर 2 में बैठते हैं।

निर्धारिती – जी, मैं कमरा नंबर 2 से ही आया हूँ। वहाँ एक साहब बैठे थे। उन्होंने ही मुझे आपके पास भेजा है।

हिंदी अधिकारी – अरे! कमरा नंबर 2 वाले साहब ने ही आपको मेरे पास भेजा है? अच्छा, ये बताइए कि आपको क्या काम है?

निर्धारिती – साहब! मुझे एक मामले में सुनवाई के लिए आज बुलाया गया है। कर निर्धारण के एक मामले में मुझ पर शास्ति लगाई गई थी। मैंने जब दुबारा विचार करने के लिए अर्जी दी तो सुनवाई के लिए मुझे आज बुलाया गया है।

हिंदी अधिकारी – अच्छा! तो कर निर्धारण के मामले में सुनवाई के लिए आपको बुलाया गया है। चलिए, मैं भी आपके साथ ही चलता हूँ। मुझे भी उन साहब से थोड़ा काम है। इसी बहाने मैं भी उनसे मिल लूँगा। (दोनों उठते हैं–)

यवनिका

दृश्य – 3 : निर्धारण अधिकारी का कमरा, हिंदी अधिकारी एवं निर्धारिती का प्रवेश

हिंदी अधिकारी – सर, क्या हम अंदर आ सकते हैं?

निर्धारण अधिकारी – आइए, आइए सिंह साहब, कहिए कैसे आना हुआ? कोई खास काम है क्या?

हिंदी अधिकारी – सर, काम तो कुछ खास नहीं है। ये एक साहब आपसे मिलना चाहते हैं, तो मैंने सोचा इसी बहाने मैं भी आपसे मिल लूँगा, सो मैं इन्हें साथ ही ले आया।

निर्धारण अधिकारी – अरे! ये तो किसी और का ही नाम ले रहे थे। क्या नाम बताया था आपने?

निर्धारिती – जी, निर्धारण अधिकारी से मिलना है मुझे।

निर्धारण अधिकारी – सिंह साहब, ये अपने ऑफिस में निर्धारण अधिकारी कौन है?

हिंदी अधिकारी – सर Assessing Officer को ही हिंदी में निर्धारण अधिकारी कहते हैं।

निर्धारण अधिकारी – Oh ! My God ! मुझे तो पता ही नहीं था। खैर, कोई बात नहीं। निर्धारिती की ओर देखकर– कहिए, क्या काम है?

निर्धारिती – साहब, आज मेरे केस की सुनवाई के लिए मुझे बुलाया गया है।

निर्धारण अधिकारी – बताइए, क्या केस है?

(निर्धारिती कठिन तकनीकी शब्दावली में अपना केस प्रस्तुत करता है)

निर्धारिती – (हाथ जोड़कर) साहब, मैंने अपनी लेखा बहियाँ, जिनमें मेरा व्यापार खाता, लाभ और हानि लेखा, तुलन-पत्र इत्यादि थे, सब अपनी आयकर विवरणी के साथ जमा किए थे। बिल और वाउचर न होने की वजह से आपने उनमें 5 लाख रुपए बढ़ा दिए और फिर

ब्याज लगाकर शास्ति भी लगा दी। साहब! मैं गरीब व्यापारी हूँ। ये तो मेरे साथ अन्याय है साहब, मैं इतना कर वहन नहीं कर पाऊँगा।

निर्धारण अधिकारी – अरे भाई! ये तुम क्या कह रहे है? ये तुलन-पत्र, शास्ति, ये सब क्या है? मुझे तो कुछ भी समझ में नहीं आ रहा है?

हिंदी अधिकारी – सर, दरअसल ये हिंदी में अपना केस आपके सामने रख रहे हैं।

निर्धारण अधिकारी – वो तो ठीक है सिंह साहब, लेकिन ये तुलन-पत्र, शास्ति ऐसी हिंदी तो मैंने कभी नहीं सुनी।

हिंदी अधिकारी – सर, ये आयकर की तकनीकी शब्दावली है। वैसे इसमें बदलाव की आवश्यकता है। इसमें बदलाव की गुंजाइश भी बहुत है सर। तुलन-पत्र का अर्थ है Balance Sheet तथा शास्ति का अर्थ Penalty है। वैसे हिंदी में Penalty के लिए दंड और जुर्माना जैसे आसान शब्द भी प्रचलित हैं लेकिन पता नहीं आयकर की तकनीकी शब्दावली में शास्ति शब्द ही क्यों लिया गया? ऐसी ही शब्दावली की वजह से लोग हिंदी का विरोध करते हैं। अन्यथा हिंदी जैसी वैज्ञानिक भाषा कोई नहीं है। मैं इस संबंध में आयकर निदेशालय से बात करूँगा। इसमें सुधार होना ही चाहिए।

निर्धारण अधिकारी – सिंह साहब, मेरी समझ में ये नहीं आता कि जब काम आसानी से English में हो जाता है तो फिर हिंदी में काम करने की क्या जरूरत है?

हिंदी अधिकारी – सर, हिंदी हमारी राजभाषा है। संविधान में हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया गया है। नौकरी में आने से पूर्व सभी कार्मिक एक शपथ पत्र पर हस्ताक्षर करते हैं, उसमें ये लिखा होता है कि हम संविधान के प्रति निष्ठावान और वफादार रहेंगे इसलिए सर, ये हमारा नैतिक कर्तव्य हो जाता है कि हम हिंदी में काम करें और हिंदी को बढ़ावा दें। हमारे देश में आज भी अधिकांश लोग हिंदी में ही बात करते हैं। यहाँ तक कि 90% विज्ञापन भी हिंदी में ही दिखाए जाते हैं, फिर हम सरकारी काम ही हिंदी में क्यों नहीं कर सकते?

निर्धारण अधिकारी – वो सब मुझे नहीं मालूम सिंह साहब! But I can't work in Hindi.

यवनिका

दृश्य -4 : आयकर कार्यालय में निर्धारण अधिकारी के पिता का प्रवेश तथा एक कर्मचारी से वार्तालाप-

नि.आ. के पिता – साहब, मुझे निर्धारण अधिकारी से मिलना है।

(कर्मचारी अंग्रेजी में जवाब देता है)

कर्मचारी-1	-	What ? Whom do you want to meet ?
नि.आ. के पिता	-	साहब, मुझे निर्धारण अधिकारी से मिलना है, वो मेरा पुत्र है।
कर्मचारी-1	-	No अधिकारी, Go, जाओ, इधर कोई नहीं है।
नि.आ. के पिता	-	दूसरे कर्मचारी के पास जाकर - साहब यहाँ निर्धारण अधिकारी कहाँ बैठते हैं? मुझे उनसे मिलना है। वो मेरा पुत्र है। (इतने में पहले वाला कर्मचारी भड़क जाता है)
कर्मचारी-1	-	Don't you understand English, What I have told you ?
नि.आ. के पिता	-	जरा तमीज से बात कीजिए न साहब, मैं आपके पिता समान हूँ।
कर्मचारी-1 एवं 2	-	How dare you, Shut-up, Get out you old man. (इतने में निर्धारण अधिकारी एवं हिंदी अधिकारी का प्रवेश)
निर्धारण अधिकारी	-	(गुस्से में) What is going on ? What happened ?
कर्मचारी-1 एवं 2	-	Sir, Sir, This old man is disturbing us. (निर्धारण अधिकारी बूढ़े को देखकर प्रणाम करता है।)
निर्धारण अधिकारी	-	अरे! पिताजी आप कब आए यहाँ?
नि.आ. के पिता	-	बेटा! मैं तो कब से तेरा पता पूछ रहा हूँ। लेकिन ये लोग समझ ही नहीं रहे हैं। एक बात कहूँ बेटा! क्या भाषा के साथ-साथ लोग भी अपने नहीं रहे? क्या अंग्रेजी हमें यही सिखाती है? अगर आज ये लोग हिंदी समझते होते तो आज ये हालत न होती और न ही मेरा इतना अपमान हुआ होता।

(निर्धारण अधिकारी को पश्चाताप होता है और वह भावुक होकर कहता है)

निर्धारण अधिकारी	-	सिंह साहब, आज मेरी समझ में आया कि जो लोग अपनी भाषा और संस्कृति छोड़ देते हैं- सभ्यता उन्हें छोड़ देती है। मै आज ही आयकर निदेशालय को Letter लिखकर हिंदी को लागू करने एवं बढ़ावा देने का अनुरोध करता हूँ। भारत माता के माथे पर ''हिंदी की बिंदी'' लगनी ही चाहिए। (सभी एक साथ हाथ उठाकर नारा लगाते हैं, लगनी ही चाहिए-3)

समाप्त

यवनिका

अपनी रचना में लेखक अपना घर बसाता है। जिसका कोई घर नहीं रहा, उसके लिए रचना ही वह स्थान है जहाँ वह जी सके- अन्ततोगत्वा वह अपनी रचनाओं में भी रह नहीं पाता।

चिन्तन के एक विषय के रूप में निर्वासन जितना आकर्षक लगता है अनुभव के स्तर पर यह उतना ही भयावह है।

निर्वासन नाम है उस टूटन का, जो किसी मनुष्य और उसकी जन्मभूमि, उसके अपने स्व और स्व के वास्तविक आश्रय के बीच घटित होता है। यह एक ऐसा घाव होता है, जो कभी भी मर नहीं पाता, इसके अन्तरतम मे छिपी हुई व्यवस्था से पार पाना असम्भव होता है। यह बात सच है कि साहित्य और इतिहास में कई ऐसी कहानियाँ दर्ज हैं, जिनमें निर्वासित व्यक्ति के साहसिक, किंचित रोकांटिक, गौरवपूर्ण, यहाँ तक कि विजयोल्लास से भरे कारनामों का उल्लेख है, लेकिन ये सारी कहानियाँ बिछोह की मारक पीड़ा पर विजय प्राप्त करने के प्रयासों के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है। निर्वासित व्यक्ति की सारी उपलब्धियाँ उस चीज़ की भरपाई नहीं कर सकतीं, जिसे उसने हमेशा के लिए गँवा दिया है।

-एडवर्ड सईद

चिंतक-विचारक

कोई दस्तक दे रहा है,
दरवाज़े पर।
कितना निराशाजनक है यह
कि तुम नहीं,
नया साल आया है।

–दुन्या मिखाईल (इराक़)

अनुवाद : मनोज पटेल

केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान
नई दिल्ली